CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module P713

॥ the gurukul ॥

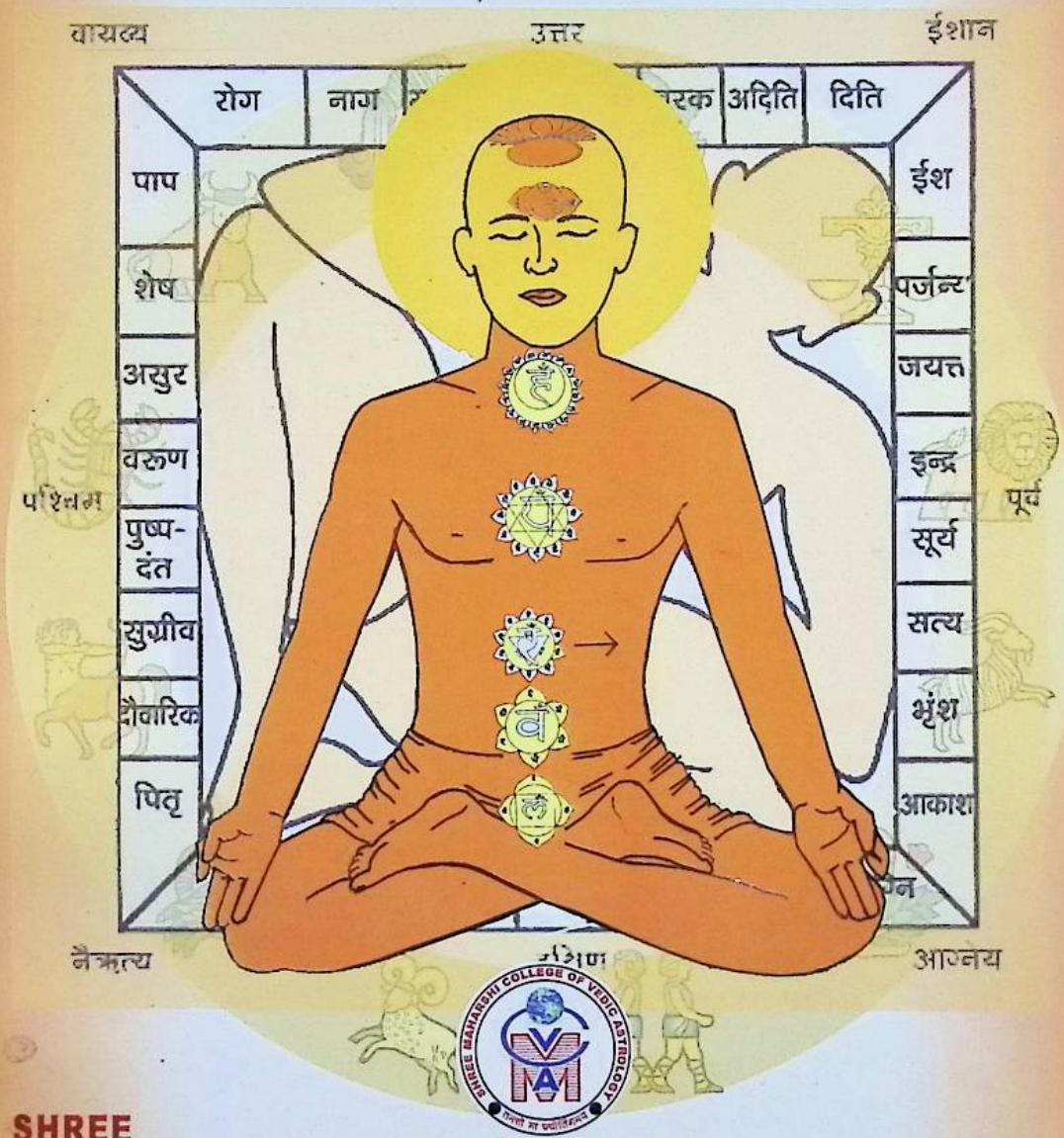

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry Module - 3

अनुक्रमणिका

पाठ 1 :-	हाथ की स्थिति व रखने का ढंग	03-19
	स्व-अभ्यास 1	20-21
पाठ 2 :-	अंगूठा	22-38
	स्व-अभ्यास 2	39-40
पाठ 3 :-	अंगुलियों का सामान्य अध्ययन	41-66
	स्व-अभ्यास 3	67-68
पाठ 4 :-	नाखून आकार आकृति	69-80
	स्व-अभ्यास 4	81-82

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाथ की स्थिति व रखने का ढंग

हाथ के बाह्य गुणों के अलावा जातक के दोनों हाथों को रखने का ढ़ंग अर्थात् उसे शरीर के साथ रखने का ताल मेल जातक के बारे में महत्वपूर्ण सूचना देता है। पहली नजर में इस स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता हैं एवं जातक के बारे में बिना उसके हाथों को छुए प्रारंभिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके बाद हस्त रेखा के हाथों की बनावट, रंग, लचीलापन व हस्त रेखा विज्ञान के नियमों का निरीक्षण करने के पश्चात् ही अपनी राय बनानी चाहिए।

हाथ के इन लक्षणों को देखकर चरित्र–जानने की शक्ति निरंतर प्रयोग और प्रयत्न करने से बढ़ाई जा सकती हैं। जब जातक सामने आकर बैठे तो उसे सहजता पूर्वक बिना आभास हुये बैठायें व उसकी गतिविधियाँ स्वाभाविक व सामान्य तरीके से होना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वह तनावग्रस्त अथवा उत्साह से भरा न हों क्योकि अगर मानसिक स्थिति सही नहीं होगी तब हाथ रखने की स्थिति भी बदल जायेगी व निष्कर्ष गलत सिद्ध होगा। जातक को शांत भाव से सामान्य व स्वाभाविक वातातरण में निर्मित लक्षणों का अध्ययन करके फल कथन किया जा सकता है। निम्न जानकारी जातक के हाथ के रखने के विभिन्न पहलुओं पर आधारित हैं।

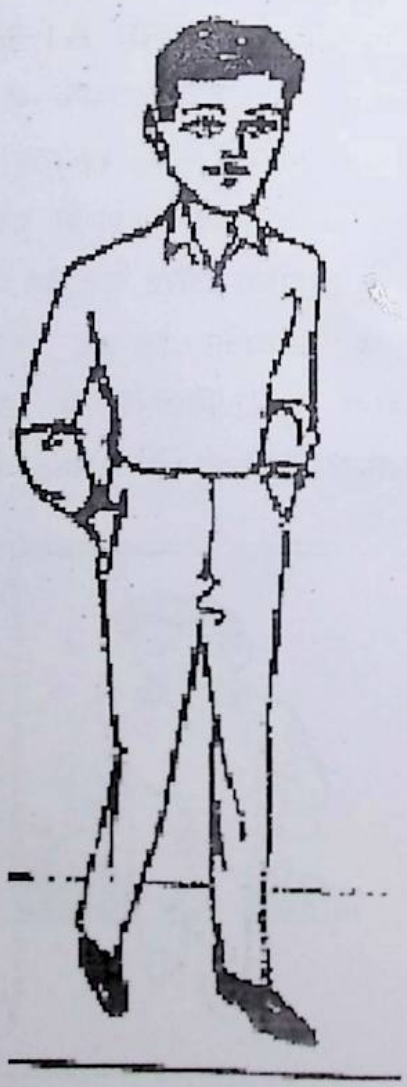

जो जातक अपनी अंगुलियां हथेली में छिपांए रखते है अथवा हाथ को पेंट की जेब में छिपाकर रखते है। वे अपने विचारों या रहस्य को छिपाकर रखना चाहते है या कोई धूर्तता जिसके प्रकट होने से उनकी असलियत सामने न आ जाये। ऐसा जातक हस्त रेखा विद्वान द्वारा बनाई हुई सच्चाई को भी छिपाने की कोशिश कर सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि कोई जातक ढ़ीला–ढ़ाला और धीमा हो तो वह अत्यन्त सवेंदनओं वाला व संवेदनशील होता है। इस जातक की कोहनी तक का बॉया हाथ पेट के पास तक उठा हुआ रहता हैं एवं पंजा कलाई से नीचे लटका रहता है। ऐसी ही स्थिति दांए हाथ की भी होती है। इस प्रकार से हाथों को रखने वाले जातक में स्त्रीत्व के गुणों का आधिपत्य रहता है। इनके चलने के तरीके में स्त्रीत्व का प्रभाव रहता है। यहीं गुण इन्हें हर हालातों में संघर्ष की शक्ति देते है और उन्नति में सहायक होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जब जातक बड़े शांत चित्त और गंभीरता से प्रवेश करता है एवं यदि उसके दोनों हाथ एक–दूसरे से बंधे हुये हो तथा उसके चेहरे पर किसी भी प्रकार की उत्तेजना नही दिखाई दे

तो ऐसे जातक किसी भी कार्य को सुव्यस्थित ढ़ंग से धीरे–धीरे करते है। इनकी रूचि सदैव श्रेष्ठ और अच्छे कार्यो में ही रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जो अपने दोनों हाथ पीठ के पीछे बंधी हुई स्थिति में रखता है तथा जिसकी आंखे कुछ ढूंढ़ती हुई सी प्रतीत होती है ऐसे जातक अत्यधिक सावधान श्रेणी में आते है। ये जातक स्वयं की समस्याओं से ज्यादा दूसरों की समस्याओं में रूचि लेते है। वे कायर व संदेहशील भी होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाथ तरह–तरह से घुमते रहते है जैसे कभी उपर कहीं दांए या बांए कभी जेब में तो कभी चाबी के छल्ले या पेन को हाथ में लेकर घूमाये या अन्य इस प्रकार की हरकत करें तो ऐसे जातक मानसिक तौर पर अनिश्चित रहते है। इनके दिमाग में परिवर्तनशील विचारों का उतार–चढ़ाव निरन्तर चलता रहता है। ये जातक कई योजनाएं बनाते है। इनका स्वयं के मन पर बिल्कुल भी नियंत्रण नही रहता परन्तु ऐसे जातक जब एक बार कुछ निश्चय कर ले तो उस पर दृढ़ रहने वाले होते हैं। ऐसे जातक को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कई जातक बड़े वैभव या राजसी तरिके से प्रवेश करते है। उनका बांया हाथ शरीर से चिपका हुआ होता है। और मुट्ठी हल्की सी बंद होती है। दांये हाथ की कोहनी सीने के आसपास मुडी होती है। इनका हाथ कुछ उठा हुआ व हथेली की अंगुलियां कुछ उपर की ओर उठी हुई रहती है।

ऐसे जातक घमण्डी और अड़ियल स्वभाव का होता है। वह अपने आगे किसी की विद्धवता को नही मानते है। वह हर क्षैत्र में अपना ज्ञान व विद्धता के अनुसार दूसरों को सीख देते रहते है। ऐसे जातक हमेशा अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के प्रति प्रयासरत रहते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस जातक के दोनों हाथ दोनों तरफ चिपके हो एवं मुट्ठियां बंद हो वे जातक आक्रामक व उग्र स्वभाव के होते है।

ऐसे जातक अपने लक्ष्य तक पहुँचने की कोशिश में प्रयत्नशील रहते है। स्वभाव की यही प्रयत्नशीलता उन्हें

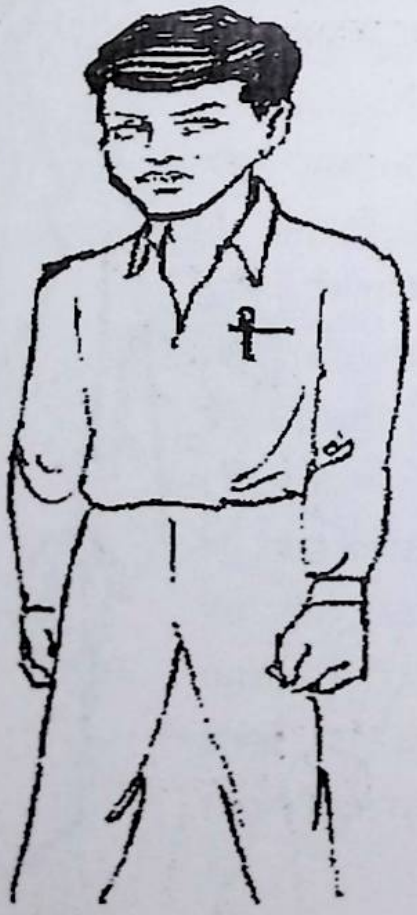

मानसिक रूप से तनावग्रस्त करती है परन्तु ऐसे जातक के स्वभाव में हमेशा दृढ़ता रहती है। इनका मानसिक तनाव अस्थाई रहता है व ये जल्दी सामान्य हो जाते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके दोनों हाथ लटके हुये हो, शरीर ढ़िला एवं थका हुआ सा दिखे व जो अपने शरीर को ऐसे ढ़ो रहा हो जैसे कोई जिंदा लाश हो। इस प्रकार के जातक निराश व नकारात्मक विचारों वाले होते है। ये जातक अपने जीवन से दुखी व परेशान रहते है। ये जातक आशावादी बिल्कुल नहीं होते है। इनके विचारों को बदलना संभव नहीं फिर भी ये जातक जीवन को समझने के लिये अपनी जिज्ञासाओं का सहारा लेते रहते है।

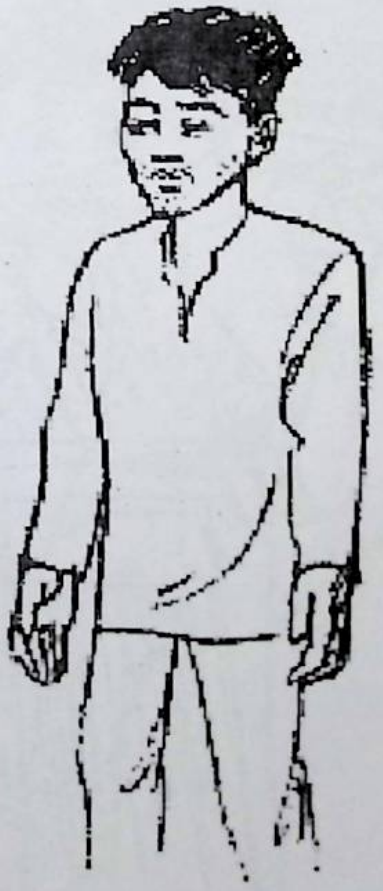

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाथ में कोई वस्तु जैसे रूमाल, घड़ी की चेन, चाबी का छल्ला जो भी हाथ में आ जाये वह उससे खेलने लगे व उसके हाथ अंगुलियों से खेलने लगे तो ऐसे जातक स्वभाव से निराशावादी होते हैं। क्षणिक उत्तेजनाओं के ज्वारभाटें इनके मस्तिष्क में निरन्तर चलते रहते है। इनके पास निश्चित योजना अथवा व्यस्थित ज्ञान नहीं होता। ये जातक कभी भी खाली नहीं बैठ सकते।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाव भाव व बनावट पहलवानों जैसी होती है अर्थात् जिनकी भुजाएं चौड़ी व हाथ फैला कर चलने की आदत रहती है व जिनके कंधे झुके हुए और मुट्ठियां जोर से भिंची रहती है वे जातक अच्छे लड़ाकु बन सकते है। ऐसे जातक खेल में भी रूचि रखते है। खिलाड़ियों में भी इस प्रकार की विशेषता मिलती है। ये जातक आत्मविश्वासी होते है।

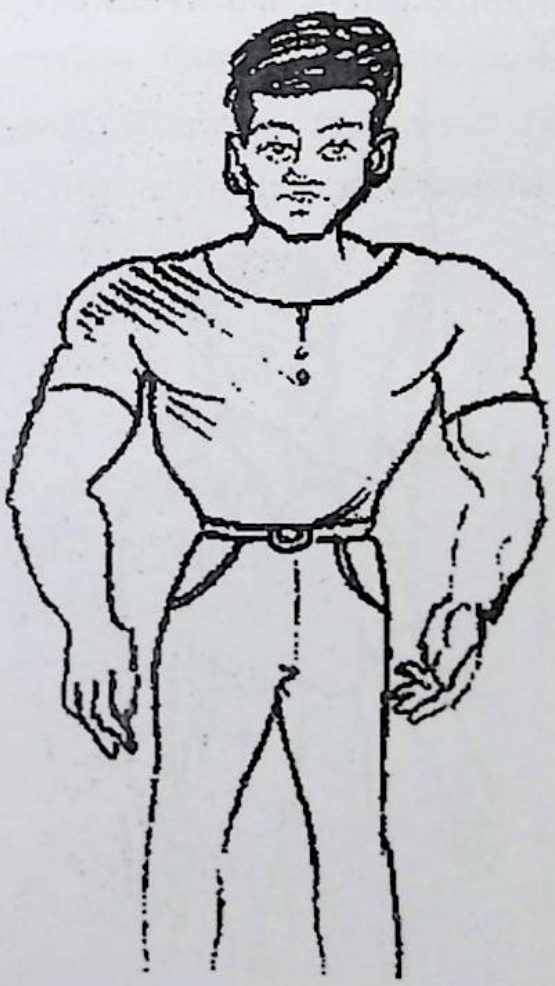

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जो अपनी अंगुलियों को हथेली में छिपाकर नही रखता उसमें अत्याधिक आत्मविश्वास होता है। बातचीत में ये जातक सहजता से जवाब देते है। विचार व विवेक शक्ति से ये हर कार्य को करते है। सामान्यतः ये दोनों हाथों को लटकाकर रखते है परन्तु उनके हाथ निर्जीव नही मालूम होते है। ऐसे जातक की अंगुलियां हथेली के अधिक निकट होना उसके आत्मविश्वासी होने का द्योतक है। ऐसा जातक हमेशा सर्तक रहता है। वह जानकारी सभी रखता है। परन्तु कभी प्रकट नही करता ऐसे जातक पर विश्वास किया जा सकता है। ये चरित्रवान व व्यवहारिक होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाथों की अंगुलियां खुली हो व उनके हाथ कंधे लटके से प्रतीत हो व ऐसा लगे जैसे उनमें जान ही न हो। ऐसे जातक में निर्णय लेने की शक्ति का अभाव रहता है। वे हमेशा एक अनिश्चितता की स्थिति में रहते है। इनका निर्णय सदैव बदल सकता है।

इन पर कभी भरोसा नहीं किया जा सकता। ऐसे जातक को किसी भी तरह की गुप्त जानकारी देना उचित नहीं हैं। इनका जीवन में कोई दृष्टिकोण नही होता। ये दूसरों की नकल करते है। ऐसे जातक को मूर्ख की श्रेणी प्रदान करना उचित है। इनके पास धन का अभाव हो जाता हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ जातक अपना बाया हाथ कमर पर टिका कर रखते है तथा दायां हाथ सीने के उपर रखे रखते है। इनकी मध्यमा व अनामिका दो अंगुलियां अंदर की ओर दबा कर रखी हो ताकि अंगुलियां सीधी हो ऐसी अवस्था से पता चलता है कि जातक कलात्मक अभिरूचि व गुणों से भरपूर है। इस मुद्रा में पुरूष जातक कम मिलेगे परन्तु स्त्रियां प्रायः बहुत मिलेगी। ये सुन्दर व कलात्मक वस्तुओं से बहुत प्रेम रखेगें। विवाहित स्त्रियों में यह अभिव्यक्ति बहुत अधिक पाई जाती है। नजाकत इनका पहला गुण होता है। सभ्रांत परिवारों की महिलाओं में यह गुण पाया जाता है। जातक स्वावलंबी होने के साथ अपना ध्यान सजने व सवंरने में भी लगाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जिनके हाथ शरीर के अनुपात से आगे बड़े हुए हो व उसके हाथ इस तरह हिलते हो मानों वह किसी को छूना चाहता है। वह हर चीज से भागता है व उससे सामना नही करना चाहता। ऐसा जातक हर जगह संदेह करता है वह हमेशा वहम से ग्रस्त रहता है। जातक नजरों से हर चीज का बारीकी से निरक्षण करता है। ऐसे जातक बहुत सरलता से दृष्टिगोचर हो जाते है। ऐसे जातक सर्तक और खोजपूर्ण भावनाओं के द्योतक है। ऐसे जातक सामने वाले के बारे में अधिक से अधिक जानने की कोशिश करते है। ऐसे जातक को सभी बाते सहजता से बता देने से वह आपका प्रशंसक बन जायेगा।

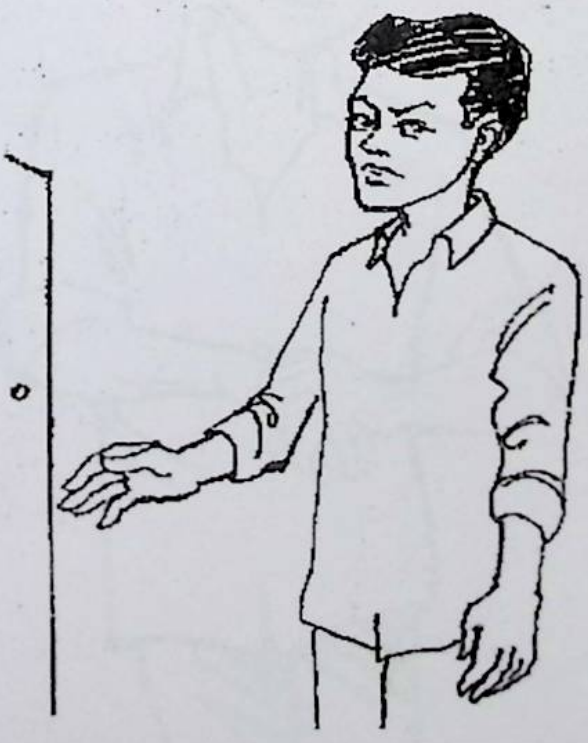

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक जो दोनों हाथ आपस में मलता हुआ आये व ऐसा प्रतीत हो जैसे वह अपने हाथ धो रहा है, ऐसे जातक प्रायः बदमाश, झुठे व मक्कार होते है। ऐसे जातक पर किसी भी प्रकार का भरोसा नही किया जा सकता। ऐसे जातक दोहरा चरित्र लिये रहते है। ये अपना कार्य निकालने के लिये किसी भी हद तक जा सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस प्रकार कई विशेषताओं व विलक्षण आदर्तों से एक समरूप भावों की उत्पति प्रकट होती है जिससे किसी भी जातक के भविष्य के कथन में सरलता प्राप्त होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व– अभ्यास – 1

निचे दिये गये व्यक्तियों के हाथ रखने के ढ़ंग से उनका स्वभाव बताइये।

1.

2.

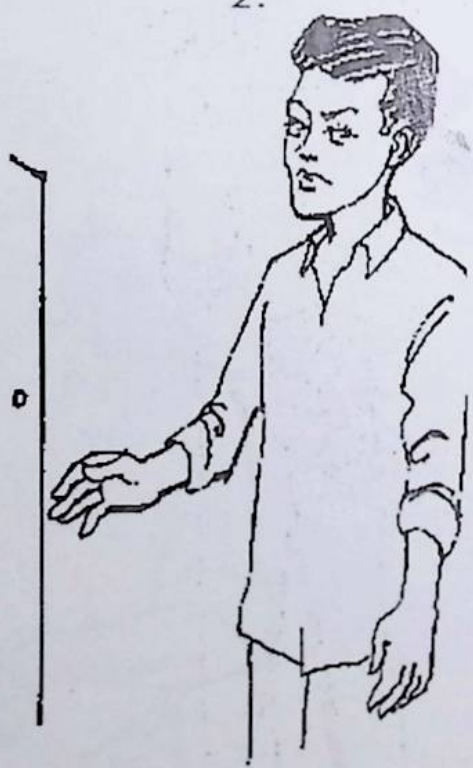

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3

4.

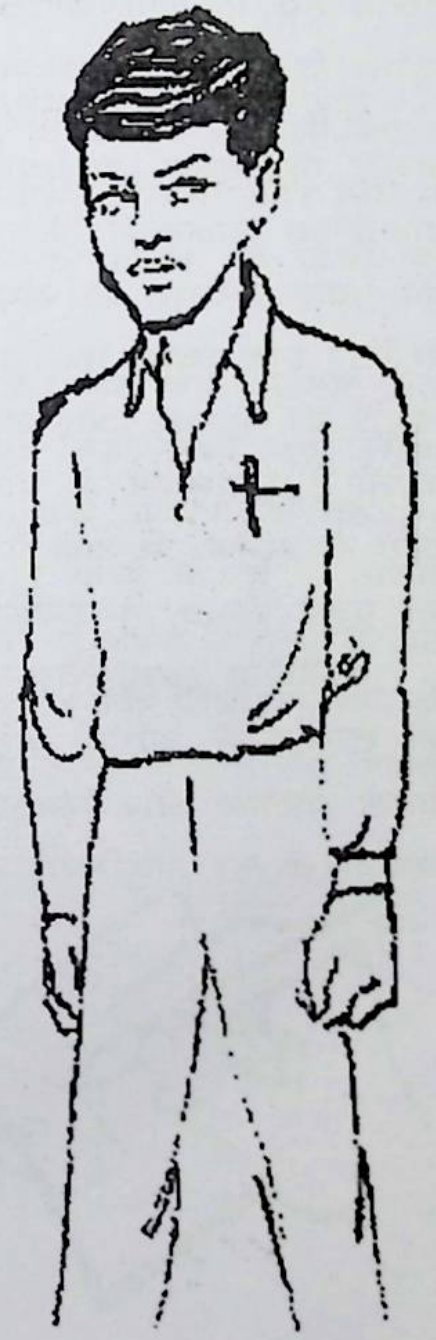

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठा

हाथ में अंगूठा शक्ति और क्रिया शक्ति का द्योतक है। अंगूठे के सुक्ष्म अध्ययन से जातक के चरित्र की कई प्रामाणिक जानकारी मिलती है। अंगूठे के बिना न तो हाथ की पकड़ मजबूत हो सकती है और न ही सभी अंगुलियों के सिरे एक स्थान पर मिल सकते है। केवल मनुष्यों को ही अंगूठे की बनावट और उसकी स्थिति अन्य जीवों से अलग करती है। जानवरों के पंजो में अंगूठा नहीं होता। अंगूठे के द्वारा ही मनुष्य ने अनेको उपलब्धियां प्राप्त की है और स्वयं को प्राणी जगत में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध किया है।

शारीरिक रचना विज्ञान की दृष्टि से अंगूठे में, अंगुलियों की तुलना में अधिक मांस पेशियां होती है। अंगुलियां में केवल फैलाने और सिकुड़ने वाली ही मांसपेशियाँ होती है जिनके कारण अंगुलियां केवल खुलती और बंद होती है।

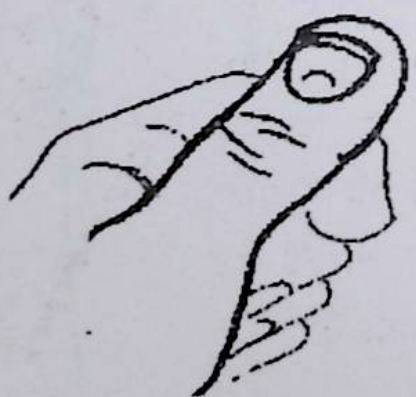

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जबकि अंगूठे की मांसपेशियां इस प्रकार की होती है कि अंगूठा गोलाई में घूम सकता है। इसके साथ ही यह प्रत्येक अंगुली की विशेष सहायता कर सकता है। अंगूठे के कारण मनुष्य सभी प्रकार के कार्य करने में समर्थ है इसी कारण से मनुष्य ने भारी मशीनों का आविष्कार किया और हाथ में कलम पकड़कर इतिहास और ज्ञान–विज्ञान के ग्रंथों की रचना मनुष्यों द्वारा की जा सकी।

अंगूठा इच्छाशक्ति को दर्शाता है। जब बच्चा जन्म लेता है तो उसमे किसी प्रकार की इच्छा नहीं होती तब उसका अंगूठा अंगुलियों में छिपा रहता है। इस अवस्था में वह 24 घंटे में से 12 घंटे केवल सोने का कार्य करता है अर्थात् बच्चे में इच्छा केवल विद्यमान हैं परन्तु बच्चा जैसे–जैसे बड़ा होता है। वह सोना कम करता है। उसके विचार करने की शक्ति बढ़ती है तब धीरे–धीरे अंगूठा स्पष्ट दिखाई देने लगता है अर्थात् इच्छाशक्ति अपना कार्य आरम्भ कर देती है। कम बुद्धि व अविकसित मस्तिष्क वाले जातकों में अंगूठा अत्यंत दुर्बल होता है। मिरगी कें रोगी के अंगूठे की स्थिति इस बात की पुष्ठि करती है। जब उन्हें दौरा पड़ता है तो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके अंगूठे की क्रिया बंद हो जाती है एवं वह हथेली के मध्य बंद हो जाता है अर्थात् रोगी द्वारा दोरे के प्रभाव को रोकना कठिन हो जाता है। क्योकि उसकी इच्छा शक्ति पूर्णतया समाप्त हो चुकी होती है।

अंगूठे की स्थिति

अंगूठे के आधार पर शुक्र पर्वत है। शुक्र पर्वत प्रेम, सहानुभूति, काम भावना तथा जीवन शक्ति की मात्रा की विशेषताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करता बल्कि मस्तिष्क के विवेक से संबंधित उत्कृष्ट भाग का प्रतिनिधित्व करता है। जातक में उचित एवं अनुचित निर्णय करने की योग्यता होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि अंगूठा कलाई के निकट से उदित हुआ हो तो जातक में बुद्धिमानी व मानवीय गुणों की विशेषतांए बढ़ जाती है। तर्जनी अंगुली तथा इसके बीच में काफी स्थान खाली हो तो जातक सर्व गुणों से सम्पन्न माना जाता है। ऐसे जातक में उदारता, आत्मनिर्भरता एवं सहानुभूति पायी जाती है।

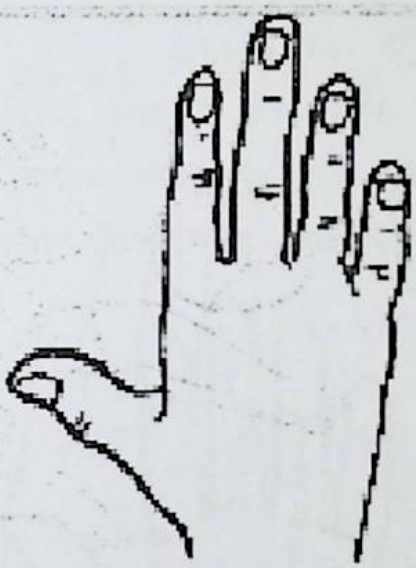

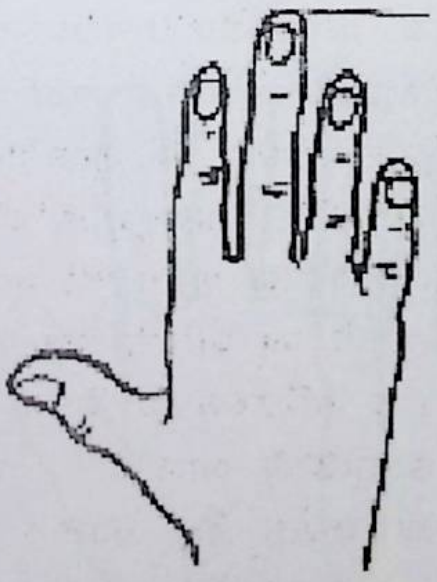

यदि अंगूठ उँचाई पर अर्थात् आक्रमक मंगल के किनारे से उदित हुआ है तो जातक उतना ही कम बुद्धि वाला, बलवान और बल द्वारा इच्छाओं की पूर्ति करना चाहेगा। जातक में चंचलता के साथ धूर्तता भी होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे की लंबाई

अंगूठे की स्थिति अर्थात् उदय स्थान के पश्चात् उसकी लंबाई का अध्ययन करना चाहिये। लंबा अंगूठा जातक के दृढ़ निश्चय और तर्क शक्ति को बल देता है।

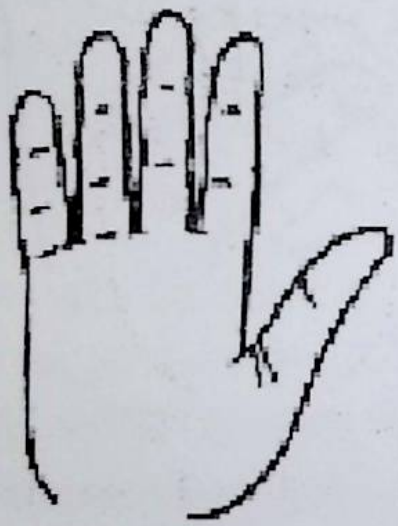

छोटा अंगूठा स्वार्थपूर्ण प्रवृत्ति व पशुता को बल देता है।

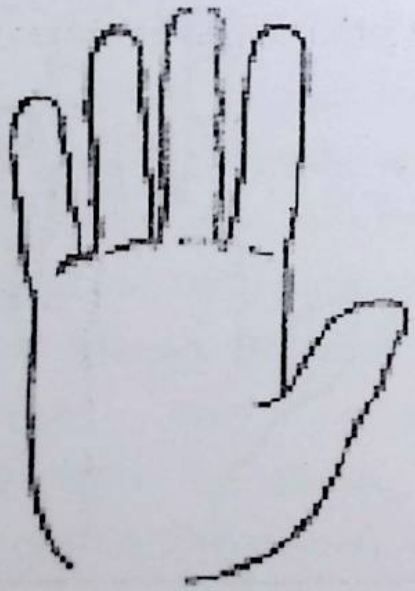

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि अंगूठा प्रथम अंगुली के पर्व के मध्य तक पहुँचता है तो उसे लंबा अंगूठा कहते है। यदि अंगूठा वहा नहीं पहुंचता तो उसे छोटा अंगूठा कहते है।

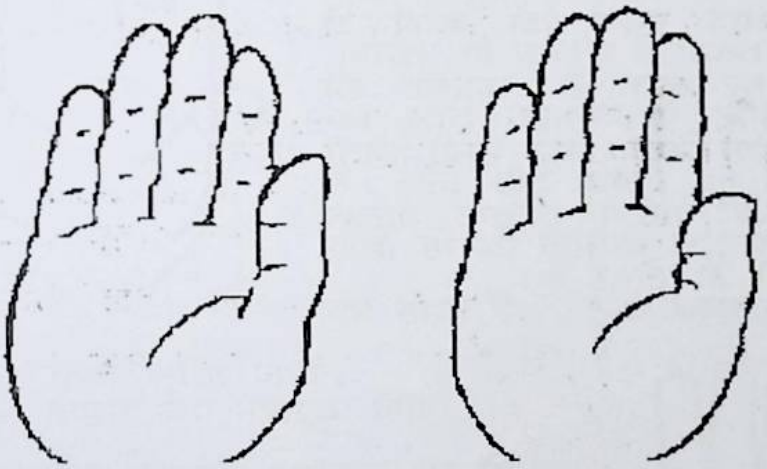

अंगूठे के दो पोर होते है, पहला पोर जातक की संकल्पशक्ति की मात्रा बताता हैं दूसरा पोर जातक की विश्लेषण शक्ति या विचार शक्ति की मात्रा बताता है।

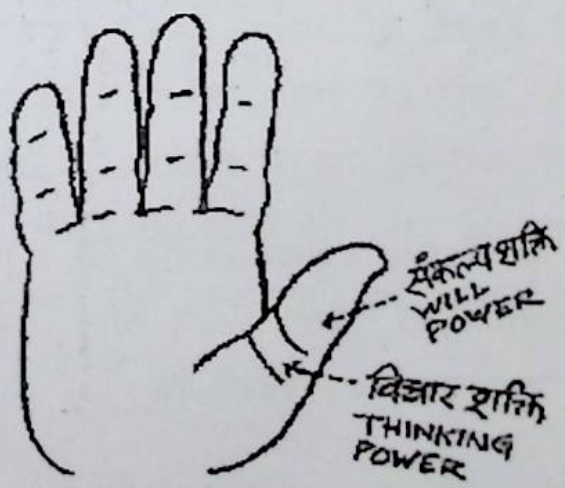

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि अंगूठे का पहला पर्व दूसरे पर्व से अधिक लंबा है तो इच्छा शक्ति तर्क शक्ति से अधिक होगी। ऐसा जातक स्वयं को कार्य में सलंग्न कर लेता है। जातक की इच्छा शक्ति विवेक पर हावी होती है, जिसके कारण जातक गलत निर्णय भी ले लेता है।

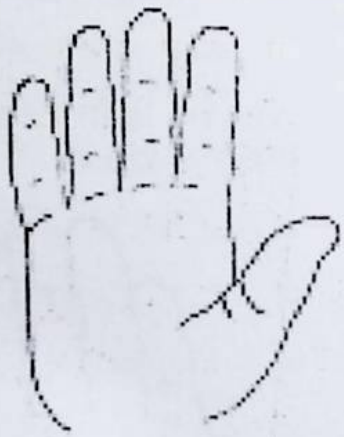

यदि दूसरा पर्व पहले से लंबा हो तो जातक सोचता अधिक है एवं करता कम है। उसमें दृढ़ इच्छा शक्ति का अभाव होता है परन्तु तर्क शक्ति व चतुरता की अधिकता रहती है इसलिये निश्चय को क्रियात्मक रूप नहीं दे पाते।

यदि दोनों पर्व बराबर लंबाई के हो तो जातक की चिंतन और कर्म शक्ति में संतुलन बना रहता है

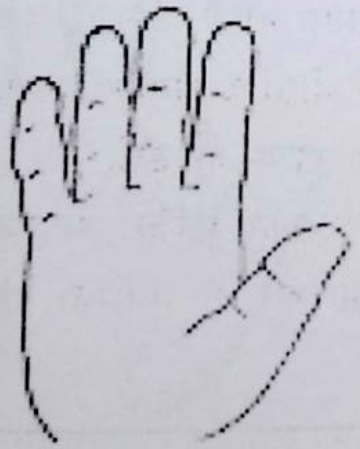

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

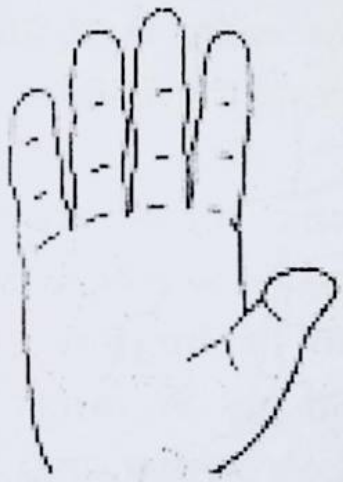

लंबे अंगुठे वाले जातक की संकल्प शक्ति समाज और मानवता के लिये लाभप्रद होती है। किन्तु यदि अंगूठा छोटा हो तो मानवता व उदारता के बजाय हिसंकता व पशुता का भाव जातक में अधिक होता है। यदि छोटे अंगूठे का दूसरा पर्व लंबा हो तो जातक आलसी स्वभाव का होता है। उसके पास सोच होती है परन्तु कर्म शक्ति नहीं।

अंगूठे की लचक

मनुष्य के अंगूठे की लचक से उसके स्वभाव में बहुत अधिक संबंध है। अतः अंगूठे को मोड़कर उसकी लचक का अध्ययन करना चाहिये। जिस जातक के अंगूठे में लचक नही होती उसका स्वभाव सर्तक होता है। ऐसे जातक की मनोवृत्ति संकीर्ण होती है। जातक मित्रतापूर्ण तथा मिलनसार स्वभाव के होते है। अंगूठे का पीछे की ओर झुकाव होने से कल्पना शक्ति, भावुकता एवं अकारण खर्च करने की प्रवृत्ति जातक में अधिक रहती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे का आकार

यदि अंगूठे के नीचे का भाग बहुत भारी, रूखा और मांस का लोथड़ा सा प्रतीत हो तो जातक क्रुर और पाशविक प्रवृत्ति का होता है। उसमें शालीनता का अभाव रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि किसी जातक का अंगूठा सपाट दिखाई दे तो जातक का स्वभाव अधीर तथा उसके विचारों में असंतुलन होता है।

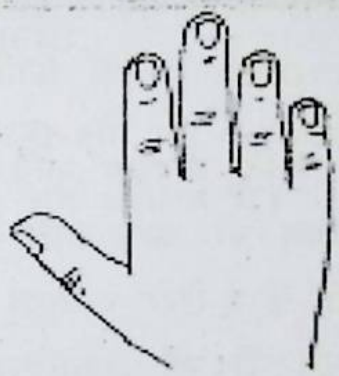

यदि किसी जातक का अंगूठा उपर से गोल न हो एवं उसके नाखून चौड़े, दोनों पर्व भी चौड़े और दृढ़ हो तो जातक में दृढ़ इच्छा शक्ति होती है। ऐसा जातक हर कठिनाई में उसका सामना करता है और परिणामों तक पहूंच कर सफलता प्राप्त करता है।

यदि किसी जातक का अंगूठा संपूर्ण रूप से आरंभ से अंत तक समान मोटापन लिये हो एवं उसका सिर चौकोर अथवा नोकदार हो व नाखून गुलाबी रंग लिये हों तथा त्वचा अच्छे किस्म की हो तो जताक में दृढ़ इच्छाशक्ति होती है। ये जातक उत्तम श्रेणी मे आते है।

गोल अंगूठा

सिर चौकोर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे का अग्र भाग

यदि अंगूठा नुकिला है तो जातक में इच्छाशक्ति की कमी होती है। ऐसे जातक जल्दी ही किसी से भी प्रभावित हो जाते है व उनके बहकावे में आ जाते है।

आगे का सिरा वर्गाकार हो तो जातक में क्रियात्मकता और सहज बुद्धि दोनों का सामांजस्य होता है। जातक कार्य कुशल व व्यवहारिक होता है।

आगे से चम्मच या सुवाकार जैसा अंगूठा जातक की कार्यशीलता, स्वतंत्र स्वभाव और मौलिकता को बढ़ाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे में उपर नाखून के चारों ओर पहला पर्व चौडा हो तो यह जातक में दृढता का प्रतीक है।

यदि अंगूठे का पहला पर्व मोटा, आगे से गोल या चौड़ा एवं नाखून चौड़े व छोटे हो तो ऐसे जातक हिंसक स्वभाव व विकृत मानसिकता के होते है। ये आवेश में या क्रोध अवस्था में किसी की हत्या करने में भी हिचकते नहीं है।

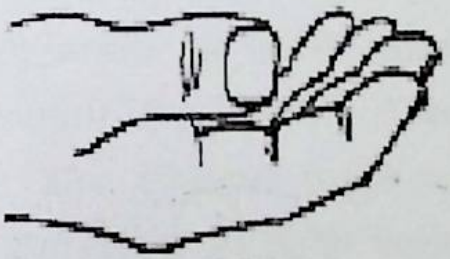

यदि अंगूठे के दोनों पर्वो के बीच में गांठ हो तो ये गांठ विचारों के प्रवाह में रूकावट की निशानी है। यदि दूसरा पर्व छोटा और संकरा हो तो बुद्धिमता और चतुराई का पर्याय है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे का झुकाव

अंगूठा फैलाने पर यदि वह भीतर की ओर झुके तो जातक अकड़ वाला और हिंसक प्रवृत्ति का होता है। यदि अंगूठा बाहर की ओर झुके तो जातक में हिंसा का भाव नहीं होता है। जातक सभी परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का प्रयत्न करना है। यदि अंगूठा सीधा हो तो जातक संतुलित और पक्के इरादे का होता है।

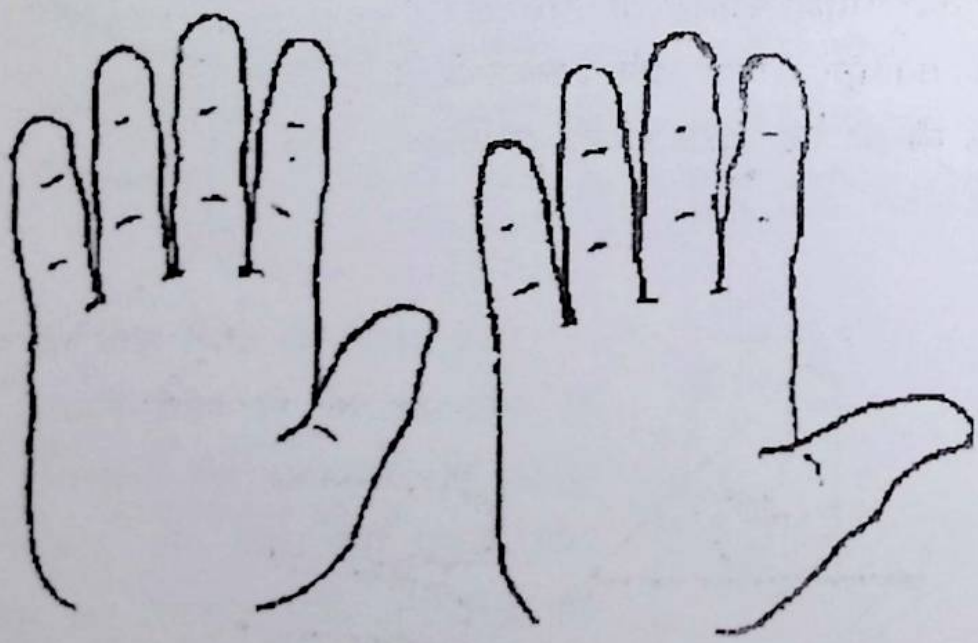

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगूठे के कोण

अंगूठे के मध्य तर्जनी का फासला तथा कोण

अगर अंगुलियों और अंगूठों को फैलाकार रखे तो तर्जनी और अंगूठे के मध्य कोण बनते है। ये निम्नलिखित है और इनके प्रभाव भी भिन्न–भिन्न है।

1. न्यून कोण

यदि अंगूठे को फैलाने पर तर्जनी के साथ न्यून कोण अर्थात् 90° से कम कोण बने तो जातक में स्वतंत्र चिंतन और संतुलित विचारों की कमी आती है। जीतना अधिक कोण बनेगा जातक उतनी परंपरा और रूढ़िवादी प्रकृति का होगा। ऐसे अंगूठे को तमोगुणी कहा जाता है। ऐसे जातक अपने जीवन, समाज से कोई लाभ नहीं ले सकते।

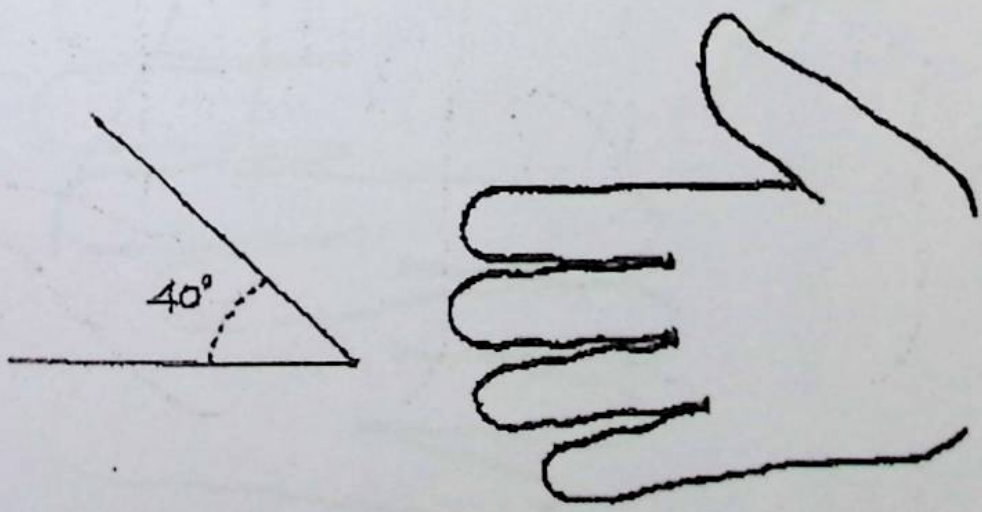

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. समकोण

तर्जनी व अंगूठे को फैलाने पर समकोण 90° का कोण बने तो जातक संतुलित विचारों वाला होता है ऐसे जातक बातों के बजाय अपने कर्मो पर विश्वास रखते है। जातक का क्रोधी स्वभाव होता है परन्तु यह किसी का अहित नहीं करते न ही किसी के आगे झुकते है।

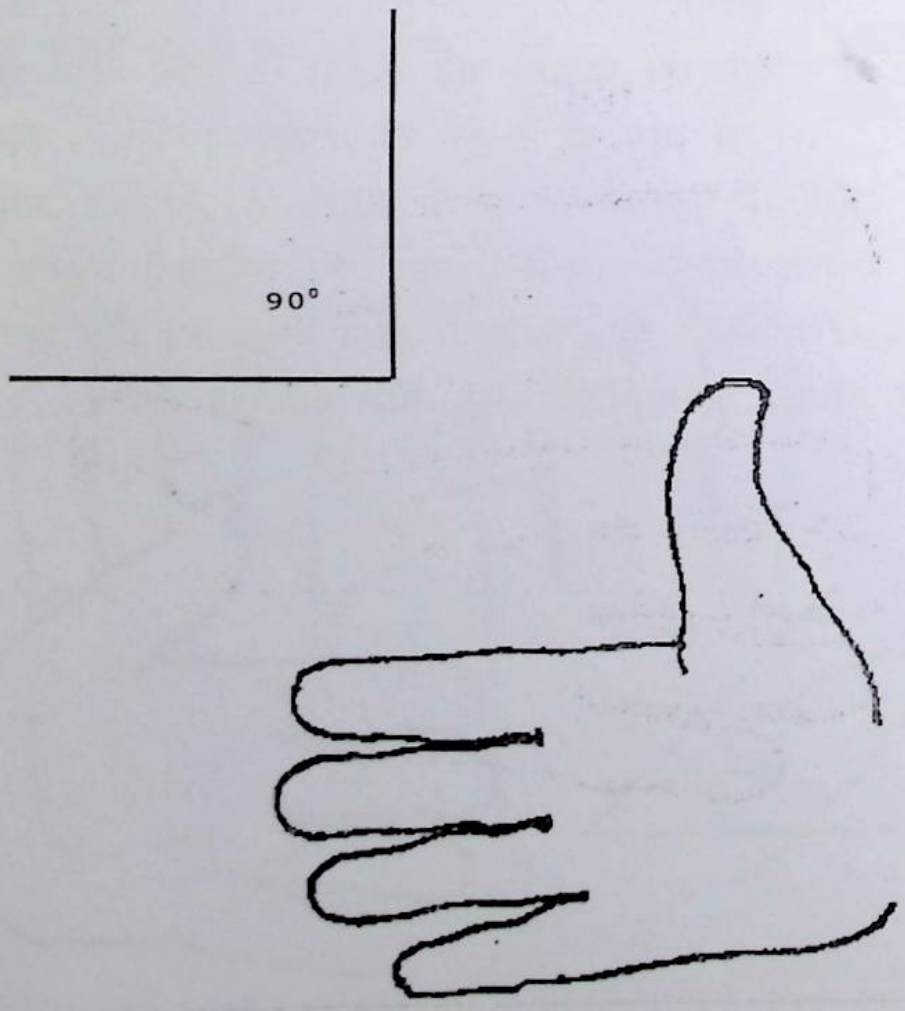

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. अधिक कोण

यदि अंगूठे को फैलाने पर 90° से अधिक कोण बने तो जातक स्वेच्छाकारी होता है। वह किसी के कहने में नहीं आता। ऐसा जातक स्वार्थ की अपेक्षा, मानव सेवा एवं समाज सेवा करता है। ऐसे जातक परिवर्तनशील होते है और जीवन में बाधाओं से झुझते हुये सफलता प्राप्त करता है।

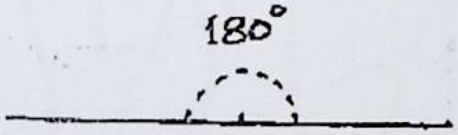

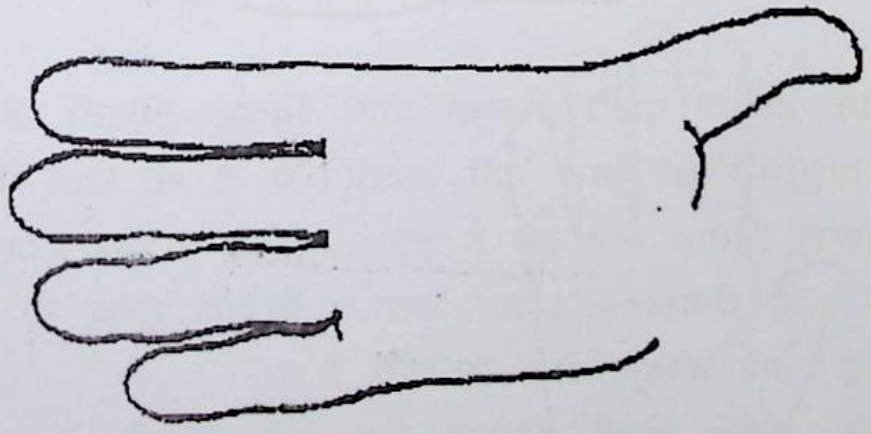

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्रियों के अंगूठे

जिन स्त्रियों के हाथ में अंगूठा सीधा, गोल नाखून वाला, मूलायम चिकनाहट वाला हो तो यह शुभ लक्षण होते है। जिन स्त्रियों के अंगूठे तथा अंगुलियों में चिन्ह हो एवं उपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्रियां बहुत धन–धान्य की स्वामिनी होती है। उनका जीवन राजसी ठाठ से व्यतीत होता है।

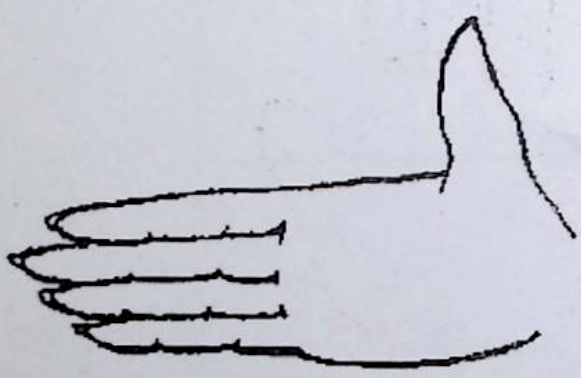

छोटे अंगूठे वाली स्त्रियां प्रेम विवाह करती है। वे उचित–अनुचित का ज्ञान नहीं रखती। वे ये भी नहीं देखती की जिससे विवाह कर रही है वह इस की पात्रता रखता है या नहीं। वे केवल भावुकता वश व विवेक शुन्य हो ऐसा करती है और जीवन भर पछताती है।

लंबे अंगूठे वाली स्त्रियां प्रेम तो करती है परन्तु विवेकशील व संतुलित भाव रख, पात्रता रखने वाले को जीवन साथी के रूप में वरण करती है और जीवन को सफल बनाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व–अभ्यास – 2

निचे दिये गये अंगूठे के आधार को पहचानिये तथा वैसे आकार के अंगूठे वाले जातक का स्वभाव बताइये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

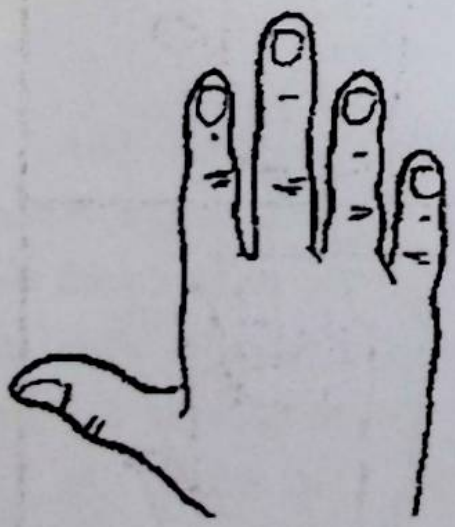

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों का झुकाव

हाथ को संपूर्ण रूप से देखने के बाद अंगुलियों का अध्यन करके यह ज्ञान करना चाहिये की अंगुलियां छोटी है या लंबी यह भी देखना चाहिये कि वे गांठदार है अथवा सरल, आगे से चौड़ी है या नोकदार, इत्यादि। प्रत्येक अंगुली का अध्ययन पृथक रूप से करना चाहिये। प्रत्येक अंगुली का एक नाम होता है।

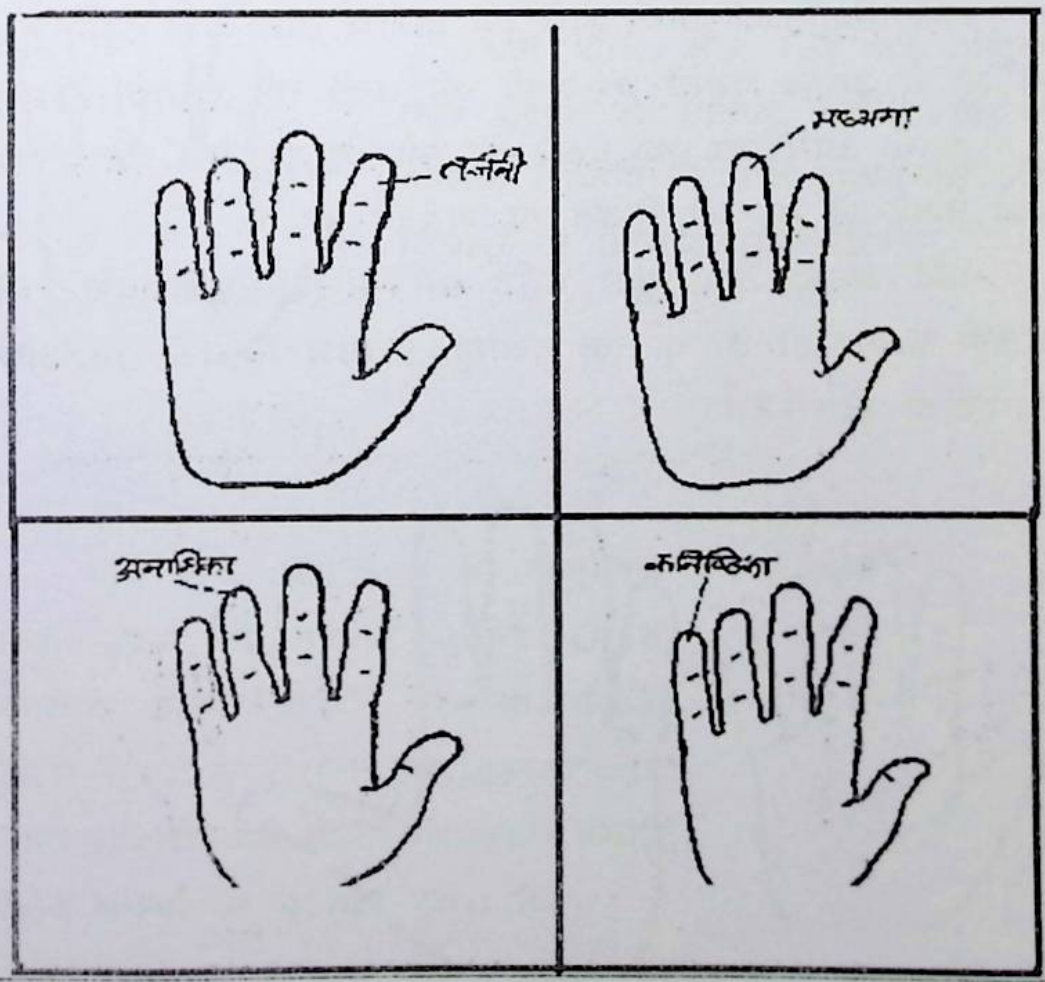

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस अंगुली के नीचे जो पर्वत अथवा उभार होते है उससे उसके गुणों का परिचय प्राप्त होता है। तर्जनी अंगुली गुरू की मानी जाती है। उसका उभार गुरू पर्वत कहलाता है। मध्यमा शनि की मानी जाती है उसका उभार शनि पर्वत माना जाता है। अनामिका अंगुली सूर्य की मानी जाती है उसका उभार सूर्य पर्वत माना जाता है। कनिष्का बुध की मानी जाती है इसका उभार बुध पर्वत माना जाता है।

यदि अंगुलियां सीधी होने की बजाय एक ओर झुकी हुई हो तो वे अपने पर्वतों के गुणों की तेजी की द्योतक है।

इसके अतिरिक्त एक दूसरे की ओर झूकी होने की जगह एक दूसरे से दूर भी स्थित हो सकती है।

यदि अंगूठे और गुरू पर्वत की अंगुली एक दूसरे से अलग प्रतीत हो तो जातक दयालु, स्वतंत्र विचारों का ओर स्वावलंबी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि गुरू और शनि की अंगुली अलग प्रतीत हो तो जातक अपने विचारों का स्वामी होता है वह किसी की बातों में नही आता अपना निर्णय स्वयं करता है।

यदि शनि और सूर्य की अंगुली एक दूसरे से अलग प्रतीत हो तो जातक भविष्य के प्रति लापरवाह और विचारों से आवारा होता है।

यदि सूर्य और बुध की अंगुलिया एक दूसरे से अलग प्रतीत हो तो जातक अपने कार्यो में आत्मनिर्भर होता है। उसे दूसरों की सहायता की आवश्यकता नही होती वह अपने विचारों और कार्यो में सफल होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस जातक की सभी अंगुली अलग–अलग दिखाई दे तो वह विचारो और कार्यो में निरकुंश जैसा होता है। उस पर एकदम विश्वास नहीं किया जा सकता। सामान्य शिष्टाचार संबंधी नियमों के प्रति उसकी रूचि नहीं होती है।

इसके विपरित कुछ जातकों में अंगुलियां आपस में चिपकी हुई सी प्रतीत होती है। ऐसे जातक से एकदम परिचित हो पाना कठिन होता है। वह औपचारिकता पसंद करता है। ऐसा जातक अपने आप में केंद्रित होता है। जातक कंजूस प्रवृत्ति का होता है।

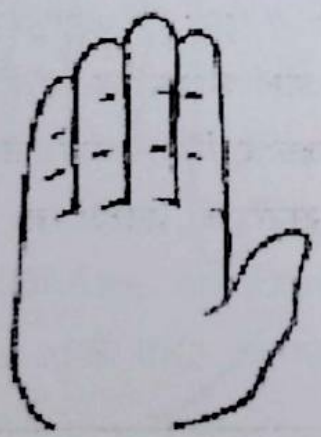

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियो पर्वो की लंबाई एवं मोटाई का तुलनात्मक प्रभाव

अंगुलियों का अध्ययन करते समय उनकी लंबाई, पर्वो तथा मोटाई की तुलना करना आवश्यक है। अंगुलियों के पर्वो का अध्ययन करने से भी बहुत सी बातों का पता चलाता है।

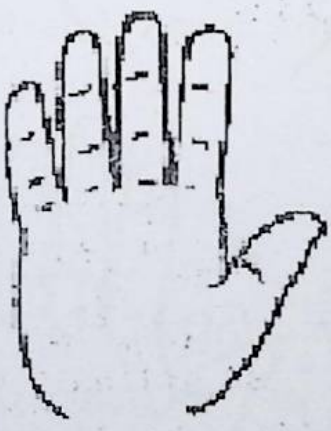

किसी जातक का पहला पर्व अन्य पर्वो की अपेक्षा अधिक लंबा हो तो यह उसके बौद्धिक गुणों का द्योतक है।

दूसरा पर्व यदि उपर या नीचे के पर्वो की अपेक्षा अधिक बड़ा हो तो जातक व्यवसायिक प्रवृत्ति का होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि तीसरा पर्व अधिक बड़ा व दृढ़ हो तो भौतिक गुणों का संकेत देता है। ऐसा जातक मौज–मस्ती व भोग विलास के जीवन में आनंद लेता है। यह पर्व अधिक मोटा हो तो जातक की रूचि खान–पान में अधिक होगी।

इसके अतिरिक्त यदि तीसरा पर्व मोटा होने के बजाय पतला हो तो ऐसे जातक जीवन व्यापन के लिये भोजन का सहारा लेता है। वह अपनी शक्ति बौद्धिक कार्य या व्यवासयिक कार्यो में खर्च करता है। उसे धन के प्रति मोह नही होता। जातक का मस्तिष्क स्थिर नही रहता। कई कार्यों में भटकता रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंबी व छोटी अंगुली के प्रभाव

सामान्य से छोटी अंगुलियों वाले जातक के कार्य में चिंतन और तर्क का पक्ष निर्बल होता है। वे निर्णय पर शीघ्र पहुँच जाते है, और पूर्ण करने में तुरन्त लग जाते है। बिना सोचे समझे कार्य की गंभीरता का कोई ज्ञान प्राप्त किये बिना किया गया कार्य सफल तो हो ही नहीं सकता अतः असफलता ही प्राप्त होती है।

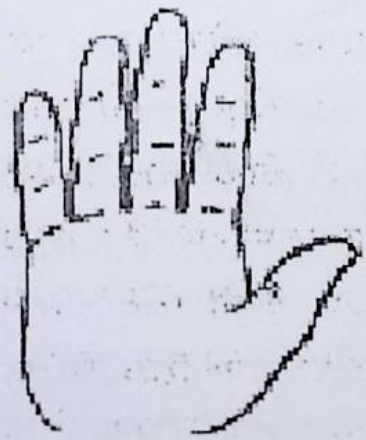

सामान्य से लंबी अंगुलियों वाले जातक हर बात के विवरण में जाते है और कार्य को सुक्ष्मता से पूर्ण व विश्लेषण करने के बाद ही करते है।

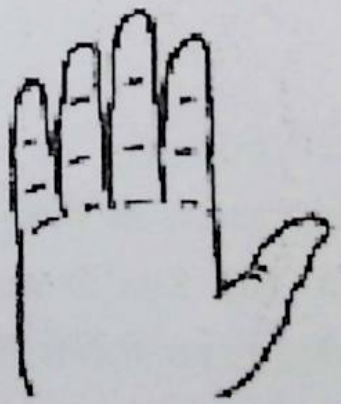

सामान्य से लंबी अंगुलियों वाले जातक सोच समझकर निर्णय लेते है। इसके साथ अगर हथेली चौड़ी हो तो सोच विचार के साथ कार्य की गति भी तेज होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित यदि लंबी अंगुलियों के साथ हथेली भी लंबी हो तो जातक ख्यालीराम होते है क्योकि हर योजना सोच–विचार के ठंड़े बस्ते में पड़ी रह जाती है।

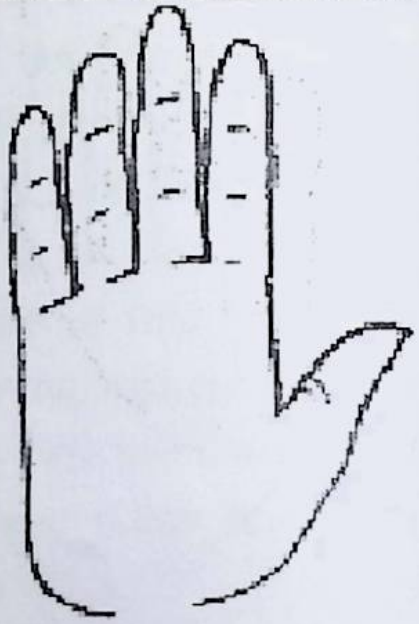

लंबी अंगुलियां अगर गांठदार हो तो विश्लेषण की योग्यताएँ और भी बढ़ जाती है।

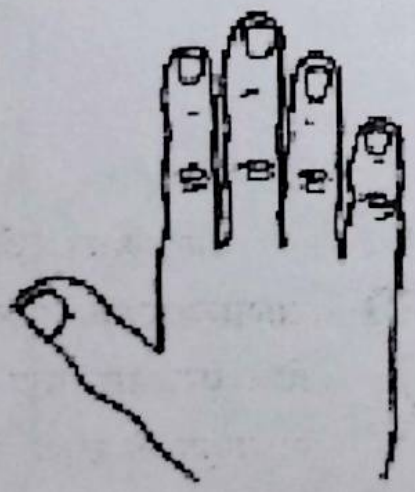

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

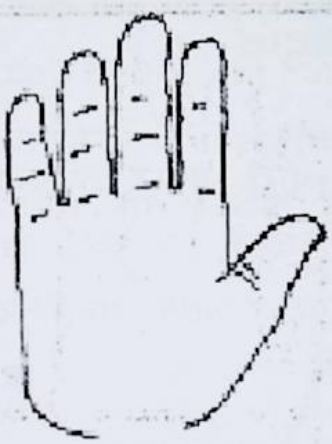

पहली अंगुली तर्जनी और तीसरी अंगुली अनामिका, मध्यमा से तनिक छोटी होती है अर्थात् दोनों ओर की दोनों अंगुलियां एक समान लंबाई की हो तो यह स्थिति सामान्य मानी जायेगी।

यदि मध्यमा, अनामिका या तर्जनी में से किस एक की लंबाई के बराबर हो तो मध्यमा छोटी मानी जायेगी।

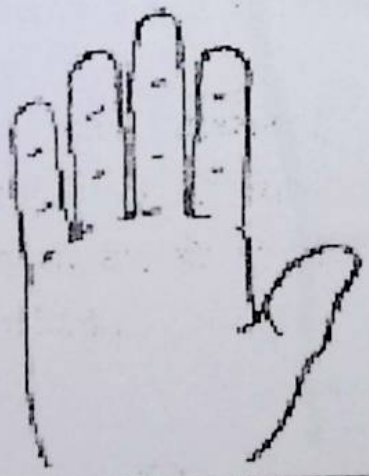

अनामिका के लंबे होने पर सामान्य लंबी तर्जनी के बराबर लंबी होने पर, सामान्य से लंबी होने पर, सामान्य से लंबी तर्जनी कहलायेगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों के बिंदुक

अंगुलियों में सामान्यतया कई बातें नजर अंदाज कर देते है परन्तु ध्यान में सूक्ष्म निरक्षण करने पर कई अद्भूत संरचनाएँ दिखाई पड़ती है इनमें से एक लक्षण अंगुलियों के बिंदुक है।

प्रत्येक अंगुली के पहले पोर के पिछले भाग पर नाखून होता है और पहले पोर के भीतरी हथेली की ओर भाग के केन्द्र में तनिक उभार होता है। इस उभरे हुये भाग को अंगुली का बिंदुक कहते है।

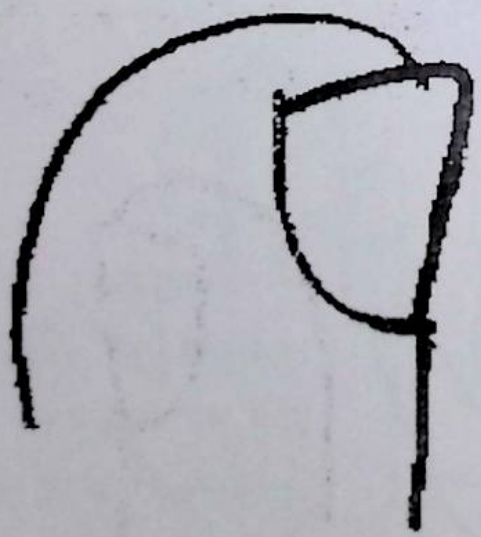

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि यह बिंदुक अधिक उभरा हुआ हो तो जातक में संवेदना शक्ति की मात्रा अधिक होती है अर्थात् जातक भावुक होता है। भावुकता से काम, क्रोध, भय, प्रेम, भावों के प्रभाव या आवेश मे आनेवाला जातक का प्रभाव है।

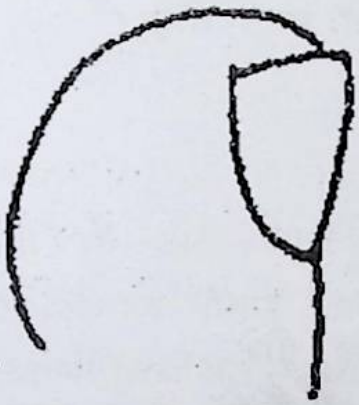

जिन जातको की अंगुलियों में बिंदुक सम अवस्था में होता है उनमें संवेदनशीलता मध्यम होती है।

जिन जातक की अंगुलियां पर यह बिंदुक होता ही नहीं अर्थात् सपाट सा लगता है उनमें भाव शून्यता पाई जाती है।

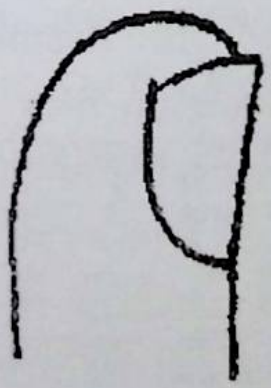

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों के अग्र भाग

हस्त रेखा विज्ञान में अंगुलियों के अग्र भाग को चार प्रकार का माना जाता हैं।

1. चम्मच की तरह चौड़ा
2. चौरस
3. शंकुनुमा
4. नकिले

1. चम्मच की तरह चौड़े

कई जातक की अंगुलियों के अग्रभाग की बनावट एक चम्मच के आकार की होती है। अंगुलियों के अग्र भाग सामने से चौड़े एवं चपटे होते है जो देखने पर एक चम्मच जैसा आकार बनाते है। ऐसी अंगुलियों वाला जातक आदर्शवादी, क्रियात्मक और सहज बुद्धि युक्त होता है। ऐसे जातक श्रम के प्रति दृढ़ इच्छा शक्ति रखते है। वे हर तरह से जीवन मे आगे बढ़ने की इच्छा शक्ति रखते है। ऐसे जातक मनोरंजन के लिये क्रियात्मक रूप से खेलो में भाग लेते है। तेज गति वाले खेल जैसे- फुटबाल, बेसबाल इत्यादि पंसद करते है। इनमें अचछे सैनिक के गुण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मौजुद होते है। वे अपने आदर्शो के लिये मृत्यु तक वरण कर सकते है। ऐसे जातक घोड़े, कुत्तों तथा सभी प्रकार के पशुओं से प्रेम करते है। ऐसे जातक रूढ़िवादी न होकर हर कार्य में कुछ नया करने का प्रयत्न करते हैं। वे किसी विशेष धर्म का अनुयायी नही होते। वह परदेश में जाकर भी कार्य कर सकते है।

2. चौरस अंगुलियां

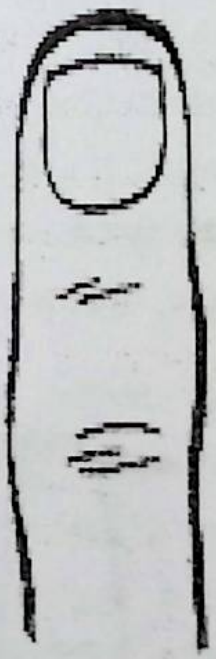

चौरस अंगुलियो के अग्र भाग चौकोर अर्थात् चारों तरह से समान चौड़ाई लिये रहते है। इस तरह के लक्षण नियमित व्यवस्था को प्रकट करते है। चौरस अंगुलियों वाले जातक को अव्यवस्था पसंद भी नहीं होती। वे अनुशासन प्रिय होते है। उनके अनुसार हर कार्य में एक नियम व नियत स्थान पर किया जाना चाहिए। ये जातक हर कार्य को समय पर करते है और सामने वाले से भी ऐसा ही करने की आशा करते है। वे नम्र व सामाजिक रीति रिवाजों को मानने वाले होते है। वे इन्हीं पर चलना पसंद करते है। इन्हें मूर्तिकला, चित्रकला और प्राकृतिक दृश्य से लगाव होता है। इस प्रकार की अंगुलियों वाले जातक क्लर्क, व्यापारी लाइब्रेरियन, गणितज्ञ और मूलरूप से वैज्ञानिक हो सकते है। ये अपने आवेशों व भावनाओं पर सदैव नियत्रंण रखते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. शंकुनुमा अंगुलिया

शंकुनुमा अंगुलियां का अग्र भाग शंकु जैसा होता है। शंकुनुमा अंगुलियां युक्त जातक कलात्मक तथा सहज बोध वाला होता है। यह प्रायः औरतों की अंगुलियों में देखने में अधिक मिलता है। इन्हें सुंदर और समरूपता वाली वस्तुओं से प्रेम होता है। यदि शंकु के आकार वाली अंगुलियां सीधी और कोमल हो तो जातक सौंदर्य युक्त चीजों को पसंद करते है। वे किसी भी समस्या का निदान तुरन्त सोच लेते है। इनमें नई सोच की विलक्षण प्रतिभा होती है; ऐसा भाव इन जातक का जीवन प्रवाह में आसानी से घुल जाता है।

इस प्रकार की अंगुलियां वाले जातक कठोर कार्य नहीं कर सकते है। वे केवल सौंदर्य लिये रहते है। इनका जीवन काव्यात्मक और स्वप्नशील होता है। ये आध्यात्मिक होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. नुकिली अंगुलियां

नुकिली अंगुलियों का आकार आगे से नुकीला होता है। नुकीली अंगुली जातक के विकसित व क्रियावान मस्तिष्क की द्योतक है। ऐसा जातक सौंदर्य व कला का प्रेमी होता है। इन जातकों का स्वभाव सौम्य होता है। ये भावुक भी होते है। ये जातक कला व मस्तिष्क संबंधी विशेष कार्यों में सलंग्न रहते है।

अंगुलियों के अग्र भाग देखते समय इन लक्षणों की पृष्ठ भूमि देखना चाहिये। जैंसे चम्मचाकार अंगुलियों वाले जातक के हाथ अगर कोमल हो तो जातक श्रम प्रिय होगा परन्तु शारीरिक रूप से श्रम नही करेगा। चौरस हाथ वाले जातक का हाथ कोमल होने पर उसमें उत्साह और शक्ति की कमी रहेगी। अंगुलियों के अग्र भाग के साथ इनके आधार स्थल से पर्वत क्षेत्रों का भी देखना चाहिये। इनके विकसित होने पर अंगुलियों के गुण बढ़ जायेंगे। जैसे उदाहरण के लिए यदि गुरू विकसित है तो जातक महत्वाकांक्षी हो जायेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों की गांठे

गांठदार अंगुलियां

प्रत्येक अंगुली में दो गांठे होती है। इन्हीं गांठों के कारण अंगुलियां अंदर की ओर मुड़ती है। अंगुलियां पर्वो द्वारा विभाजित रहती है इन्हीं दो पर्वो के स्थान पर एक उभरा हुआ हुआ स्थल गांठ कहलाता है। कुछ अंगुलियों में गांठे स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कुछ में स्पष्ट नहीं दिखती। उभरी हुई गांठ वाला जातक गठीली अंगुलियों वाला कहलाता है एवं बिना स्पष्ट अंगुलियों वाला जातक मुलायम अंगुलियों वाला कहलाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उभरी गाठों वाले जातक स्वभाव से सचेत व जिज्ञासु होते है। ऐसे जातक में तर्क, बुद्धि और विश्लेषण करने की भी योग्यता होती है। इनके कार्यों में तेजी नहीं होती।

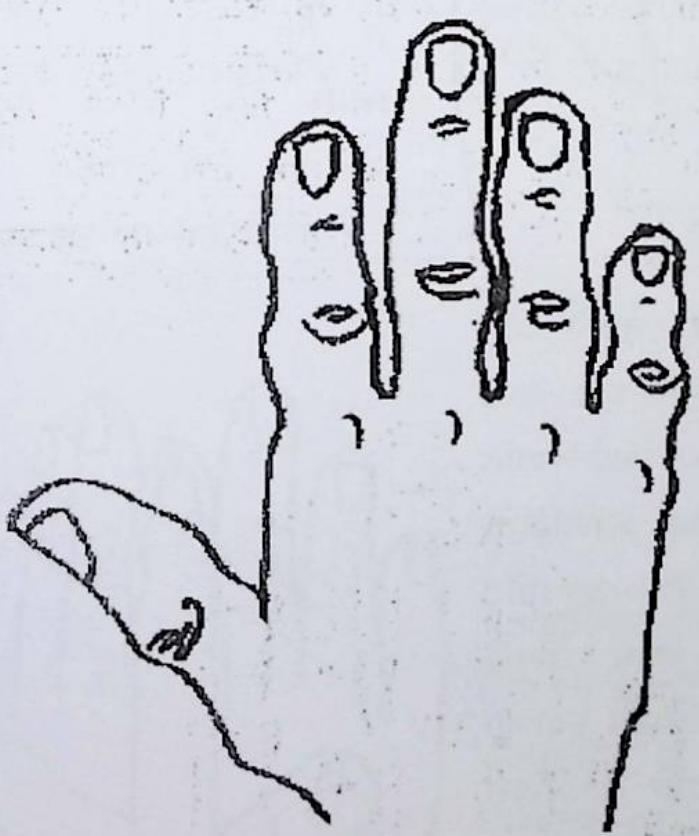

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुलायम हाथ वाले या गांठ विहिन अंगुलियों वाले जातक अपनी अन्तः प्रेरणा से काम करते है। वे जल्दी भावुकता में बह जाते है एवं सोच–विचार की चिंता नहीं करते।

पहले और दूसरे पोर के मिलन स्थल पर पाई जाने वाली गांठ प्रथम गांठ कहलाती है। इसे मानसिक गांठ भी कहते है। यह गांठ आमतौर पर कम उभरी रहती है। यदि किसी जातक विशेष में अधिक विकसित दिखाई दे तो जातक के मन की उर्जा अधिक होती है ये जातक अन्तः प्रेरणा से कार्य करते है।

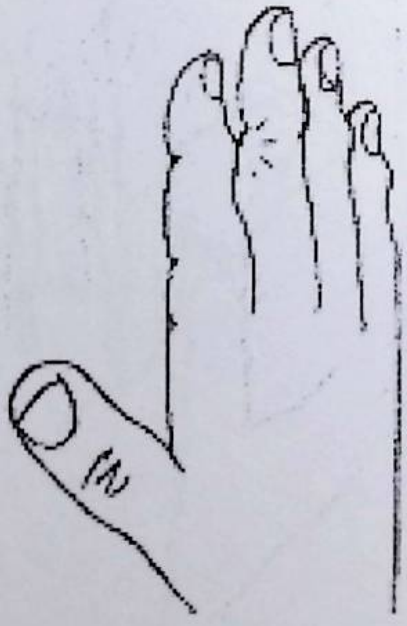

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरे व तीसरे पोर में मध्यमा की गांठ को दूसरी गांठ कहते है। दूसरी गांठ व्यवहारिक गांठ भी कहलाती है। यदि दूसरी गांठ उभरी हो तो जातक के स्वभाव में खोज बीन करने की व विश्लेषण करने की मात्रा अधिक होती है। जातक मस्तिष्क प्रधान भी होता है।

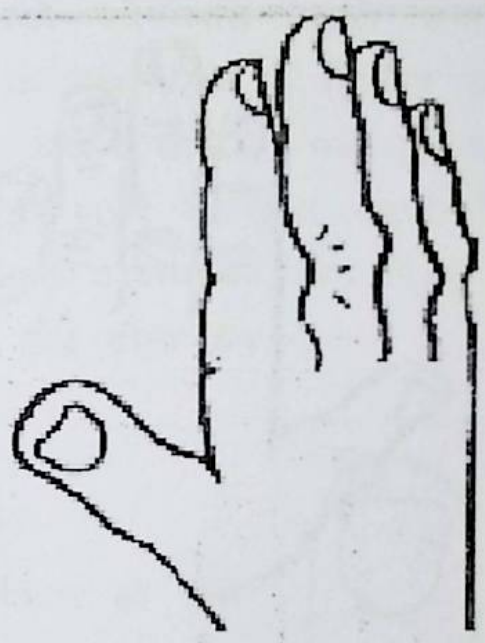

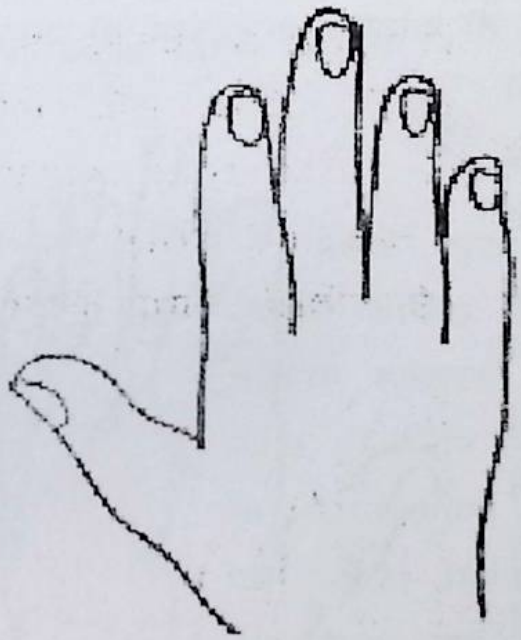

अंगुलियां अति मुलायम हो तो देखने में अति सुन्दर लगती है किन्तु ऐसा जातक वास्तविकता से दूर स्वप्नों के संसार में रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

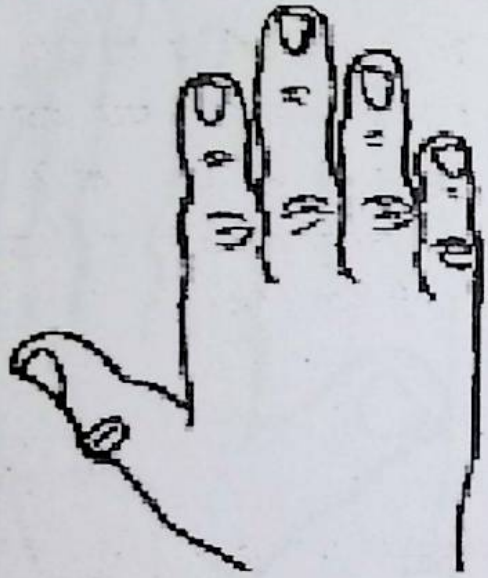

इसी प्रकार अत्यंत गठीली अंगुलियां जातक को कठोर व हठधर्मी बनाती है।

कुछ जातक के जन्म से ही गांठदार अंगुलियां हो सकती है। गांठे सीधी सरल अंगुलियों में भी हो सकती है। ऐसे अनेक उल्लेख है जो आगे चलकर तर्क शक्ति का विकास करते है, जिससे उनकी अंगुलियों में गांठ पड़ जाती है। प्रायः वृद्ध लोगो की अंगुलियां गांठदार होती है जो भावनाओं के बाद सोच विचार कर तर्क शक्ति तक पंहुचते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुलियों की गांठे देखते समय अंगुलियों के प्रथम पर्व व द्वितीय पर्व भी अवश्य देखने चाहिये। पर्व गांठदार अंगुलियों कें गुणों में वृद्धि करते है। यदि प्रथम पर्व चम्मच की तरह चौड़ा हो तो जातक हठी होता है।

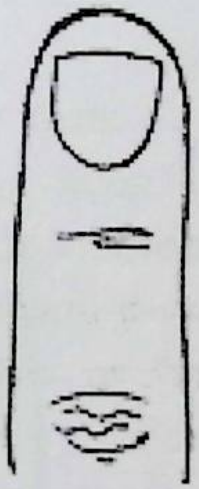

यदि गांठदार अंगुलिया नोकदार हो तो जातक समस्याओं को तेजी से हल करता है। इसी प्रकार के हाथ को आदर्श गांठ वाला हाथ माना जाता है।

इसके साथ ही हाथ की सघनता भी देखनी चाहिए जैसे हाथ कोमल है अथवा अधिक मांसल। यदि गांठदार अंगुलियों के मांस के अंदर एक छल्ला सा प्रतीत हो तो वह उसके गुणों को नष्ट करता है। अंगुलियों का पहला हिस्सा अंदर मुड़ा हुआ हो तो मानसिक गुणों को तीव्र बना देता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुली का गुण

अंगुलियों के गुण जो की प्रथम बार देखने से ही दृष्टि गोचर होते है। उन्हें प्रायः तीन मुख्य भागों में विभाजित किया गया है जो निम्न है।

1. सीधी व सरल अंगुलियां
2. लंबी अंगुलियां
3. छोटी अंगुलियां

1. सीधी व सरल अंगुलियां

सीधी एवं सरल अंगुलियों को हस्त रेखा शास्त्र में कलात्मक माना जाता हैं। प्रायः ऐसी अंगुलियों वाला जातक अपनी मानसिक उर्जा के अनुरूप कार्य करते है। वे पहले से तर्क या धनहानि या लाभ के मद्देनजर कोई कार्य नहीं करते।

जब जीवन उर्जा का प्रवाह शरीर में सरलता से होता है तो इसकी अनुकूलता ही अंगुली की सरलता के रूप में प्रकट होती है। इन्हीं कारणों से उनके मस्तिष्क में कलात्मक भाव उत्पन्न होते है। इनमें तत्काल विचारों की उत्पत्ति होती है और इन्हीं विचारों की प्रेरणा द्वारा वे कार्य आरंभ कर देते है। वे उनकी गहराईयों तक नहीं पहुंचते अर्थात् तर्क नहीं करते केवल विश्लेषण की शक्ति रखते है। इसलिये उम्र के साथ-साथ या इस प्रभाव से अंगुलियों में गांठे पड़ना शुरू हो जाती है। किसी भी कार्य के प्रथम भाव को ही देखकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ये जातक कार्य प्रारंभ कर देते है। वैसे सामान्य तौर पर इनकी कल्पनओं के प्रमाण कभी गलत नहीं होते परंतु इसमें जोखिम की संभावनाएं अत्यधिक रहती है। ये जातक अपने परिधानों, अपने आसपास के स्थानों, घर की सजावट, अपने नगर को अच्छा रखने तथा व्यापार प्रतिष्ठान और धार्मिक अनुष्ठानों पर यथा शक्ति और व्यय करते है।

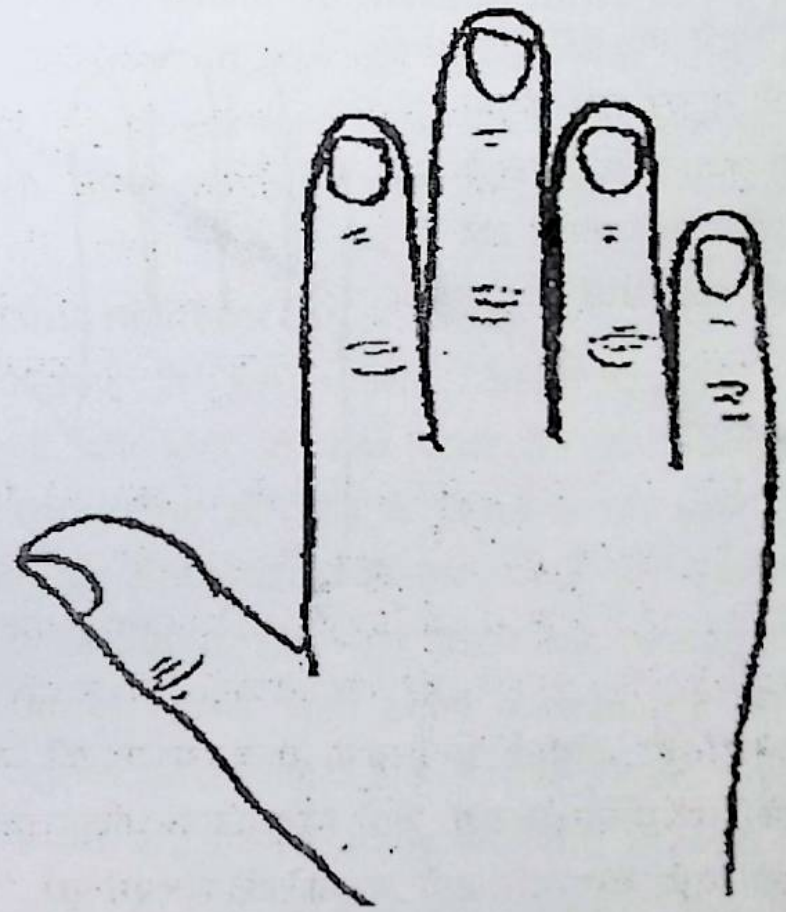

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. लंबी अंगुलियां

हथेली के अनुपात में जो अंगुलियां लंबी दिखाई दे उन्हें लंबा माना जाता है। लंबी अंगुली वाले जातक हर कार्य में संदेह दृष्टि रखते है। उनमें अत्याधिक सर्तकता होती है। छोटी–छोटी बातों पर उनका विशेष ध्यान रहता है। जैसे वे पहनावा तो साधारण करेंगे परन्तु सलिके से व साफ सुथरे कपड़े रखेगे। ये जातक अत्यधिक संवेदनशील होते है एवं छोटी–छोटी बातों का बुरा मान जाते है। ये दूसरों से ईर्ष्या की भावना रखते है जिसके कारण किसी बड़े कार्य को संपन्न नही कर पाते है।

अंगुलियों की लंबाई के साथ अग्र भाग की बनावट इनके गुणों में वृद्धि करती है। यदि अग्र भाग बिल्कुल सीधा हो तो नये विचार ग्रहण करने में जातक को अधिक समय लगता है। यदि यह गांठदार हो तो जातक के उक्त गुणों में कमी आती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लंबी अंगुलियों वाले जातक साहित्य क्षैत्र मे अत्यधिक सफलता प्राप्त करते है। ये चित्रकार भी हो सकते है क्योंकि प्रकृति की छोटी–छोटी बातों का सूक्ष्म चित्रण बड़ी सहजता के साथ कर सकते है।

वैसे प्रायः इनके कार्य करने की गति बहुत धीमी होती है ओर अधिक परिश्रम वाले कार्य भी ये जातक नही कर सकते। अत्यधिक सर्तक रहने के कारण लोग इन्हें स्वार्थी मान बैठते है। स्वभाव से ये जातक कायर होते है। ये जातक प्रतिभा सम्पन्न भी होते है। बुद्धिमता के साथ सौंदर्य प्रेम होने से कुशल दस्तकार व कारीगर होते है। आभूषणों पर नक्काशी इन्हीं अंगुलियों द्वारा होती है।

3. छोटी अंगुलियां

सामान्य से कम लंबाई वाली अंगुलियों को छोटी अंगुलियों की श्रेणी में रखा गया है। छोटी अंगुलियों वाले जातक व्यवहारिक होते है। ये केवल सतही ज्ञान लेकर कोई भी कार्य के क्रियान्वयन में लग जाते है। इनके कार्य की गति भी अधिक व शीघ्र पूर्ण करने की लालसा लिये रहती है। ये जातक सामने वालों लोगों के मनोभावों को भांप लेते है। ये जातक स्वयं निर्णय लेते है परन्तु तुरंत निर्णय लेने के कारण इनके कई निर्णय गलत भी सिद्ध हो जाते है। ये जब किसी कार्य में लग जाते है तो आक्रमक रूप से कर्मठता पूर्वक कार्य करते है। ऐसे गुणों वाले जातक ही उद्यमों के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संबंध में योजनाएं बनाते है जिनसे संसार का कल्याण होता है।

छोटी अंगुलियों वाले जातक की अंगुलियों के अग्र भाग नुकिले हो तो जातक व्यवहारिक दृष्टिकोण अपनाने में कठिनाई अनुभव करते है। छोटी अंगुलियों के साथ हाथ में लचीलापन हो तो जातक समय और स्थिति के अनुसार अपने आप को ढ़ालने की शक्ति रखता है।

छोटी अंगुली वाले जातक के हाथ कठोर हो तो जातक की क्रियाशीलता का द्योतक है तथा अंगुलियों से प्रकट होने वाले गुणों को प्रोत्साहन मिलता है। छोटी गंठिली अंगुलियों से गुणों में कमी आ जाती है। यदि छोटी अंगुलियों के साथ अंगूठा बड़ा हो तो अच्छे गुणों में कमी आ जाती है। यदि छोटी अंगुलियों के साथ अंगूठा बड़ा हो तो अच्छे गुणों को बढ़ावा मिलता है। यदि अंगूठा छोटा-मोटा तथा मुद्गर के आकार का हो तो जातक क्रूर और हठी होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व–अभ्यास – 2

निचे दि गई अंगुलियों के आधार को पहचानिये तथा वैसे आकार की अंगुलियों वाले जातक का स्वभाव बताइये।

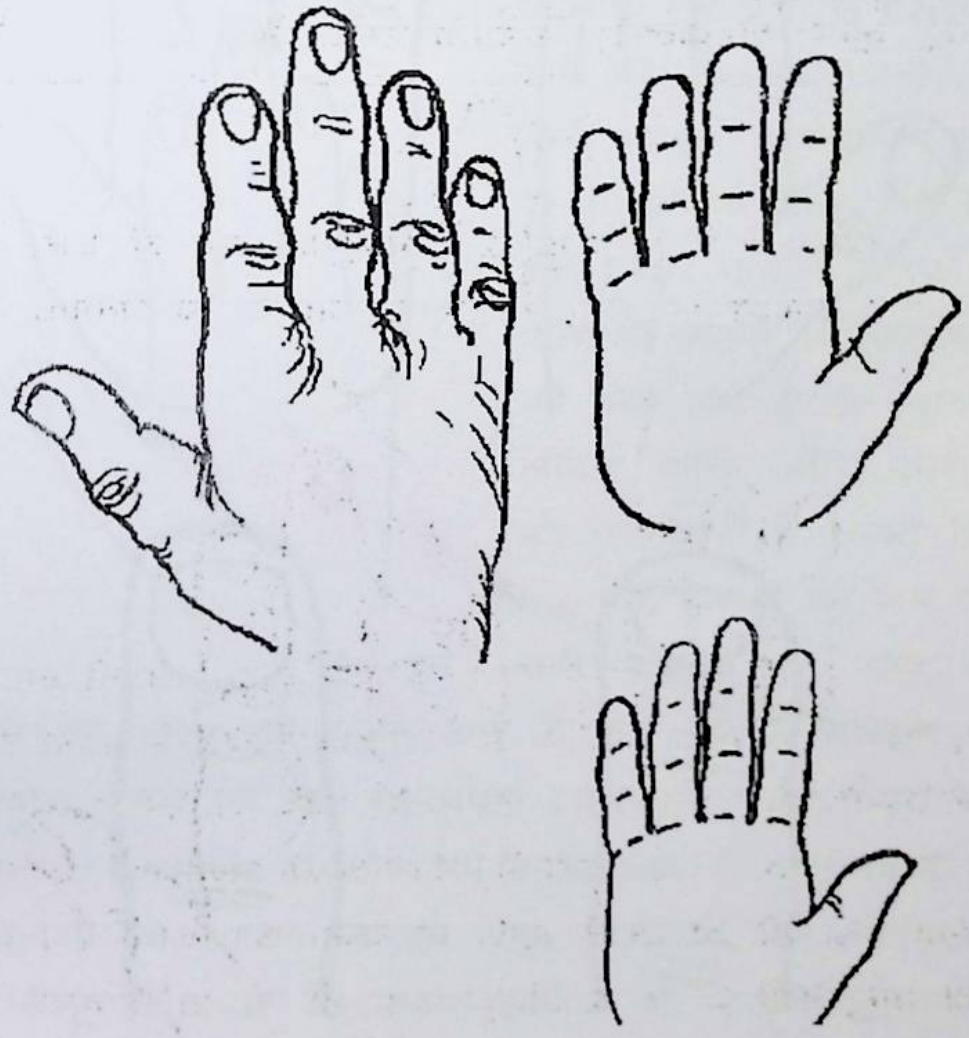

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

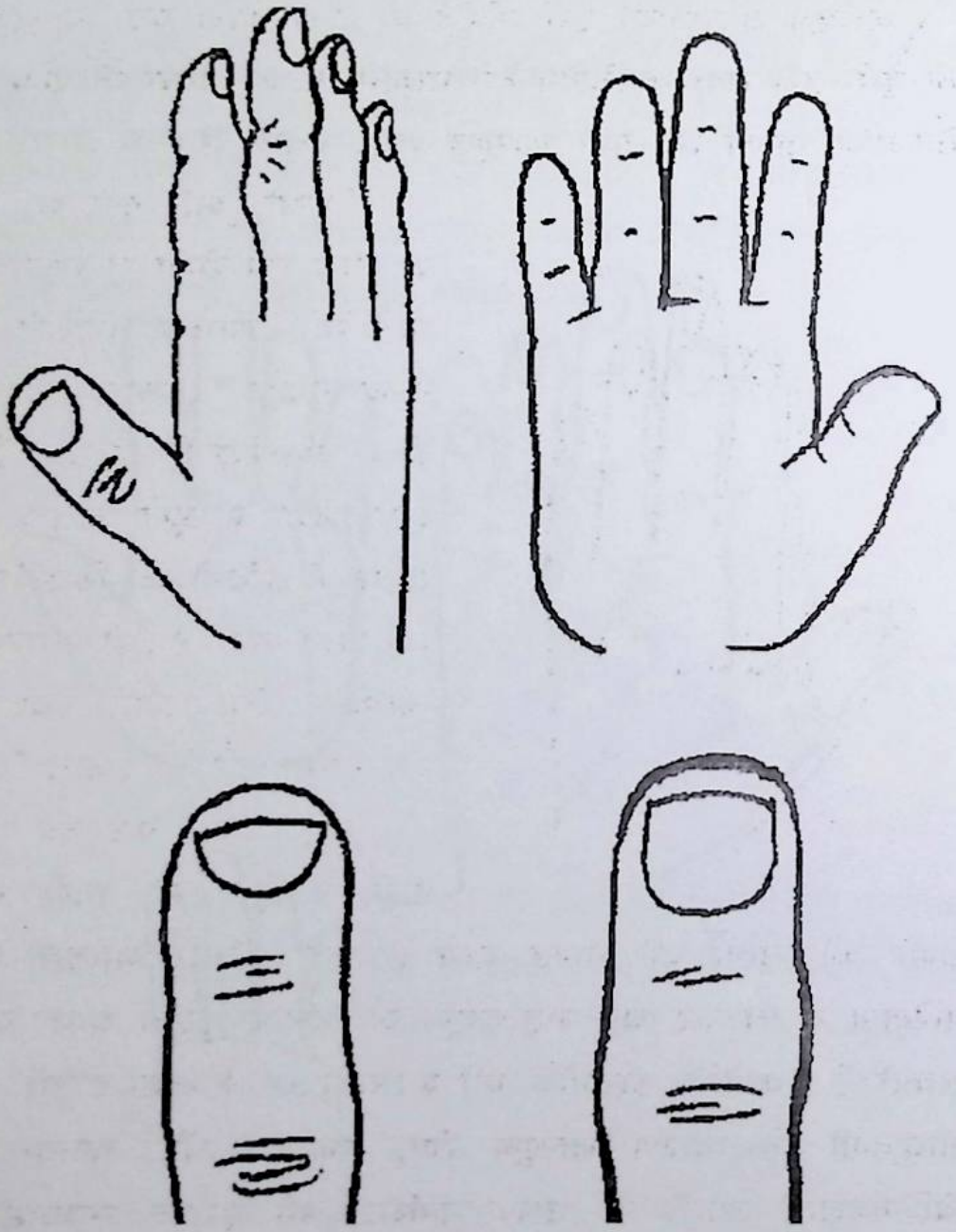

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाखून आकार आकृति

नाखून अंगुलियो एवं अंगूठे के अग्र भाग पर स्नायुयंत्र को ढ़के हुये एक कार्टिलेप की पतली सतह कवच के रूप में विद्यमान रहती है। इसे नाखून कहा जाता है।

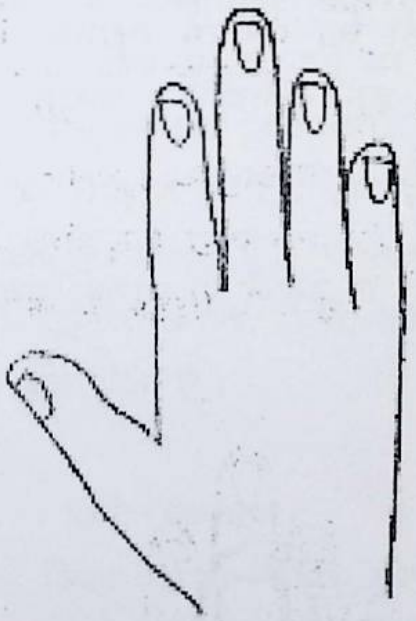

किसी भी जातक के स्वास्थ्य एवं रोगो से प्रभावित होने की संभावना जानने के लिये नाखून असाधारण रूप से मार्गदर्शक सिद्ध होते है। इस प्रकार नाखून जातक के अंतर में झांकने की खिड़कियो की तरह होते है। वे स्वास्थ, जीवन शक्ति और स्वभाव की जानकारी दे सकते है।

कई जगहों पर जब यह नहीं मालूम हो पाये की रोगी की मृत्यु की वजह क्या है तब डॉक्टर नाखून का परिक्षण करने पर यह महत्वपूर्ण जानकारी तुरन्त प्राप्त कर सकते है। क्योकि हारमोन की मात्रा रक्त में लोह तत्वों की मौजुदगी के कारण नाखून रंग, बनावट और चमक में विभिन्नताएं आती है। अन्य खनिज भी इसके आकार व प्रकार में काफी हद तक जिम्मेदार होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी आवश्यक तत्व संतुलित मात्रा में विद्यमान रहते है। हर पांच महिनों में नया नाखून पुराने नाखून के स्थान पर आ जाता है परन्तु आयु के साथ हारमोन व खनिज की कमी, इनकी वृद्धि की गति को कम करती है।

नाखून की देखभाल कितनी ही तरीके के कि जाये परन्तु इसके प्रारूप को बदला नही जा सकता क्योंकि यह एक प्राकृतिक व नैसर्गिक क्रिया द्वारा नियंत्रित रहता है। इसका प्रारूप अपरिवर्तित रहता हैं।

नाखून कई प्रकार के हो सकते है उनमें से मुख्य प्रकार निम्न दियें है।

1. उत्कृष्ट नाखून

गुलाबी रंग की चमकीली आभा वाला नाखून जो आकार मे पर्याप्त लंबा और पर्याप्त चौड़ा हो इस श्रेणी में आता है। नाखून का मध्य भाग उत्तल उभरा हुआ हो तो ऐसा नाखून जातक का मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम बनाता है।

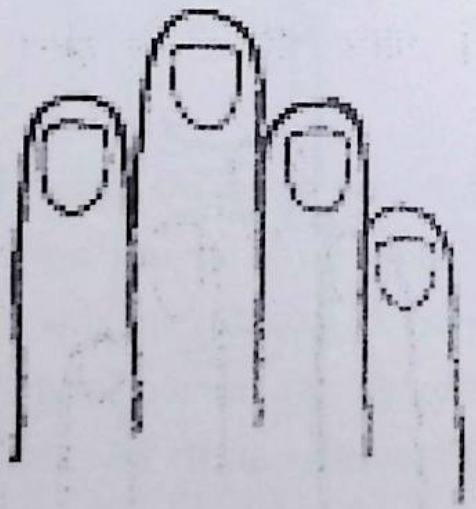

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. लंबे नाखून

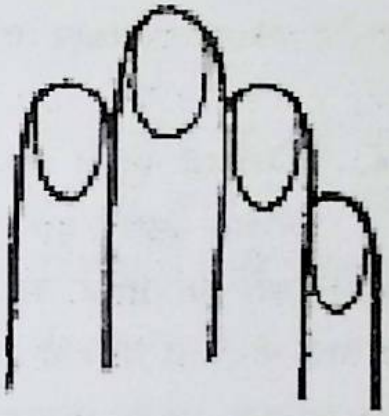

यदि किसी जातक में लंबे नाखून हो तो यह शारीरिक शक्ति में कमी का सूचक है। ऐसे जातक को छाती और फेफड़ों के रोग होने की संभावना बनी रहती है। नाखून लंबे व टेढ़े भी हो या उपर से पीछे अंगुली की ओर मुडे हुए हो व चौड़ाई में टेढ़े हो तो रोगों की संभावनाएं ओर भी बढ़ जाती है। प्रायः ऐसे जातकों में गले के रोग, दमा, श्वसनली की सूजन आदि रोगों की उत्पत्ति की सूचना इस प्रकार के नाखून देते है।

3. छोटे नाखून

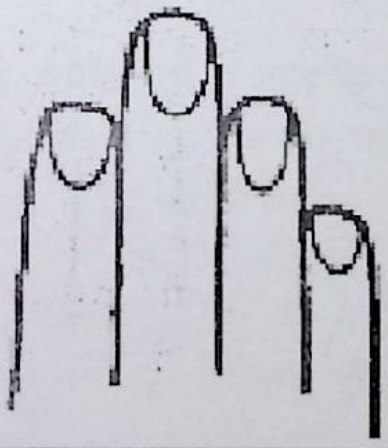

जिन परिवारों में हृदय रोग आनुवांशिक रूप से पाया जाता है उनके सदस्यों के प्रायः छोटे नाखून पाये जाते है। यदि जातक का नाखून छोटा व अपनी जड़ में सपाट व पतला हो व उनमें स्थित चंद्र का आकार बहुत छोटा या न के बराबर हो तो जातक का हृदय दुर्बल होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके विपरित यदि चंद्र का आकार बड़ा हो तो जातक के शरीर में रक्त संचार की उत्तम व सुचारूता का प्रमाण है।

4. मिश्रित गुणों वाला नाखून

मिश्रित गुणों वाले नाखून अत्यंत चपटे, अपने किनारों पर मुड़ते या उपर उठते हुये एवं लंबाई में छोटे होते है। इस प्रकार के नाखून वाला जातक पक्षाघात और लकवा रोग से पीड़ित हो सकता है। यदि नाखून सपाट और जड़ में धंसते हुये प्रतित होते हो तो भी यह स्नायु संबंधित रोग की पहचान है।

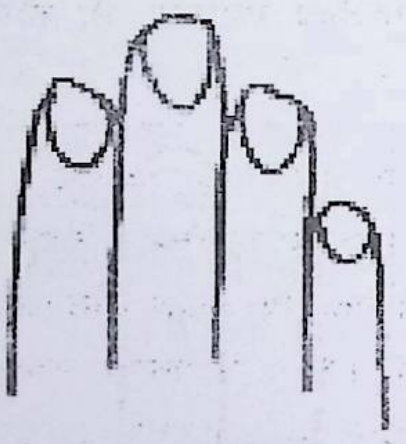

5. चौड़े नाखून

यदि नाखून लंबाई की अपेक्षा अधिक चौडे हो तो जातक झग्ड़ालु व कलहप्रिय होता है। ऐसा जातक दूसरे के कार्यो में टांग अड़ाने वाला होता है। ये जातक कुंठित स्वभाव के होते है। इनमें शारीरिक शक्ति कम होती है।

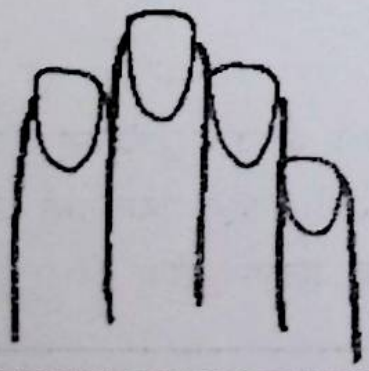

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाखून की आकृति

1. गोल नाखून

जिस नाखून के सिरे और जड़ दोनों ओर गोलाई का आभास होता है वे गोल नाखून की श्रेणी में आते है। गोल नाखून वाले जातक अच्छे मित्र हो सकते है। ये जातक कर्त्तव्य परायण भी होते है।

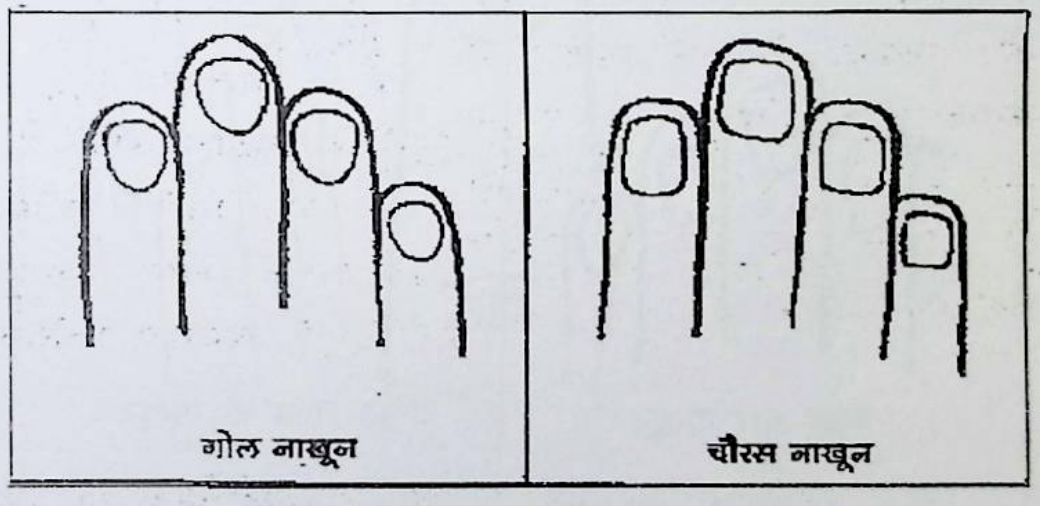

2. चौरस नाखून

जिस नाखून के सिरे व जड़ दोनों ओर से चौरस होने का आभास होते हो वे नाखून चौरस नाखून कहलाते है। चौरस नाखून जातक में कुशलता का प्रमाण है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. पंखाकार नाखून

जो नाखून जापानी पंखे की तरह जड़ की ओर से कम चौड़े होते हैं और सिरे पर अधिक चौड़े होते है वे नाखून पंखाकार नाखून की श्रेणी में आते है। पंखाकार नाखून वाले जातक आलोचक, संदेह करने वाले व मन मर्जी से कार्य करने वाले होते है।

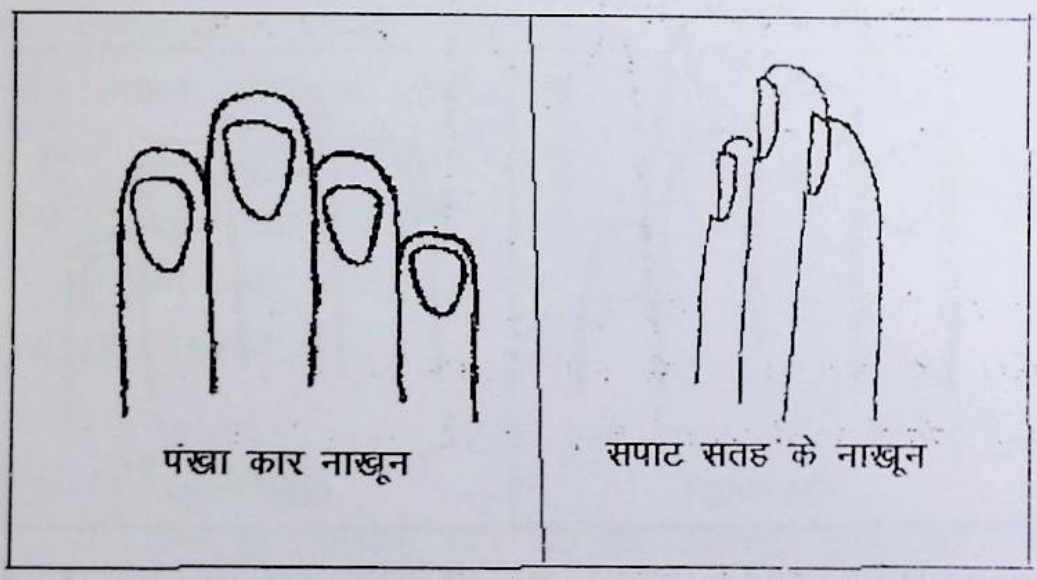

पंखा कार नाखून

सपाट सतह के नाखून

4. सपाट सतह के नाखून

जिन जातक के नाखून की सतह सपाट होती है वे नाखून सपाट सतह के नाखून की श्रेणी में आते है। ऐसे जातक दबंग स्वभाव के होते है। इन्हें शत्रुता निभाने में मजा आता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाखून पर अर्धचंद्र

नाखून की जड़ के पास छोटे–छोटे सफेद अर्धचंद्र बने हुये रहते है। अगर यह सामान्य रूप से है तो यह उत्तम स्वास्थ्य का परिचायक है।

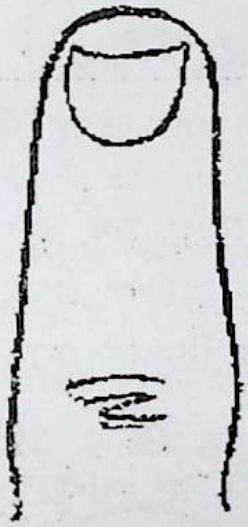

इसके विपरित बहुत बडे अर्धचंद्र हो तो जातक में थायराइड़ ग्रंथि में हारमोन की अनियमितता दर्शाते है।

ऐसे जातक हृदय संबंधी रोग होने की संभावना रहती है। यदि अर्धचंद्र बिल्कुल न हो तो भी स्वास्थ्य के लिये चिंता हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाखून के रंग

नाखून के परिक्षण के समय उनमें पाये जाने वाले रंग का अध्ययन भी करना चाहिए।

1. गुलाबी रंग

जिस जातक के नाखून का रंग गुलाबी रंग जैसे होते है उसे जातक का स्वास्थ्य उत्तम होता है। ऐसे जातक उदार प्रवृत्ति वाले होते है।

2. लाल रंग

जिस जातक के नाखून का रंग लाल जैसा हो उस जातक में शारीरिक शक्ति अधिक होती है। लाल रंग जातक में क्रोध की अधिकता व हिंसक प्रवृत्ति को दर्शाता है।

3. सफेद नाखून

जिस जातक के हाथ के नाखून का रंग सफेद जैसा होता है उस जातक में प्रायः घमंड़ की अधिकता रहती है। ऐसा जातक हमेशा उतावलापन व मानसिक उत्तेजनाओं से ग्रसित रहता है।

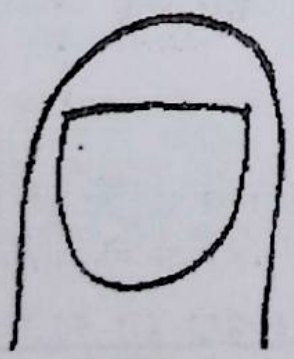

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. पीला नाखून

जिस जातक के हाथ के नाखून का रंग पीलापन लिये हो वह जातक में पीलिया रोग या जिगर की कमजोरी का आभास कराता है।

5. नीला रंग

हाथ के नाखून में पीला रंग प्रायः जातक के रक्त में आक्सीजन की कमी बताता है। प्रायः स्त्रियों में खून की कमी से भी यह रंग दिखाई पड़ता है। यदि जड़ों में नीला रंग हो तो जातक को हृदय रोग की आशंका रहती है।

6. काला रंग

यदि जातक के नाखून का रंग काला हो तो यह रक्त के दूषित होने का संकेत है। ऐसे जातक की शारीरिक शक्ति कम होती है। इन जातकों की रोग प्रतिरोधक प्रणाली भी कमजोर होती है एवं वे जल्दी ही रोगग्रस्त हो जाते हैं।

नाखून कि उपरी सतह की चमक का अपना विशेष महत्व है। यदि किसी जातक के नाखून में चमक बनी रहे तो यह शारीरिक स्वास्थ्यता की द्योतक है किन्तु यदि किसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक के नाखून चमकहीन हो तो यह जातक के रोगग्रस्त होने का संकेत देती है।

नाखून के धब्बे व धारियाँ

1. धब्बे

यदि नाखून पर धब्बे पाये जाये तो यह उस जातक में मानसिक तनाव की अधिकता दर्शाते है एवं जातक के स्नायु मंड़ल के कमजोर होने का संकेत देते है। काले व पीले रंग के धब्बे जातक के जीवन असफलता तथा अस्वस्थता की स्थिति को दर्शाते है।

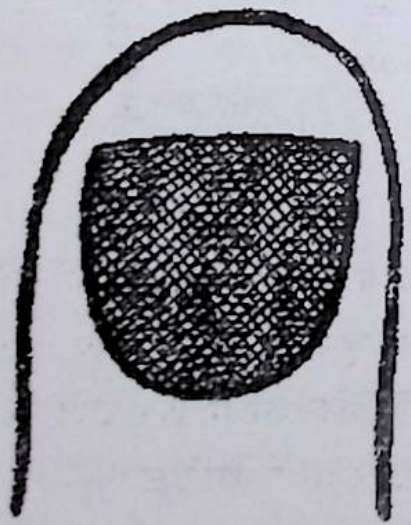

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. आड़ी धारियाँ

आड़ी धारियाँ तथा छोटे गड्डे जातक में मानसिक आघात की सूचना देते है।

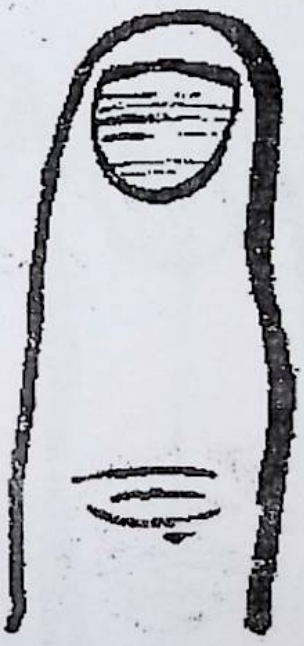

इसके पिछे मुख्य कारण जातक के विशेष परिस्थिति में नाखून का विकास कुछ समय रूक जाने के कारण इस प्रकार की स्थिति निर्मित होती है। ऐसे जातक को रक्त चाप व हृदय की जांच करवाना चाहिए।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. खड़ी धारियाँ

यदि जातक के नाखून में खड़ी धारियाँ मौजुद हो तो यह उस जातक के स्नायुमंड़ल की कमजोरी को दर्शाता हैं। इसका मुख्य कारण जातक के मस्तिष्क को पोषण करने वाले खनिजों की कमी है।

अत्यधिक धारियाँ अधिक तनाव बनाती है। यदि नाखून छोटे हो तो यह जातक के अधीर स्वभाव का द्योतक है। ऐसा जातक छोटी-छोटी बातों में चिंताग्रस्त हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्व–अभ्यास– 4

निचे दिये गये नाखून के आधार को पहचानिये तथा वैसे आकार के नाखून वाले जातक को स्वभाव बताइये।

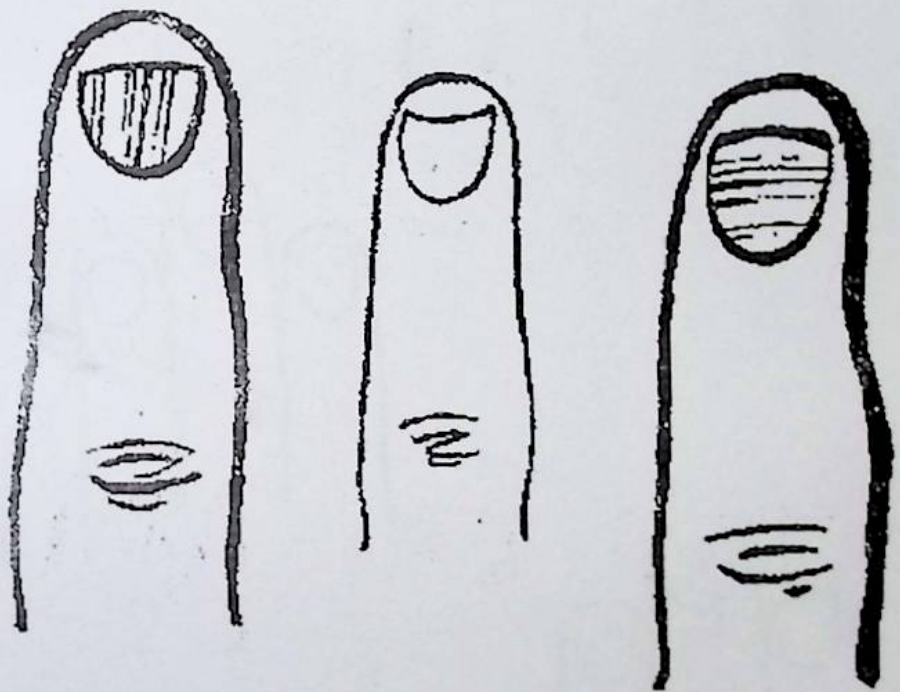

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

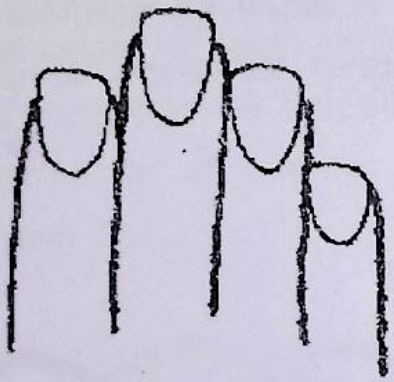

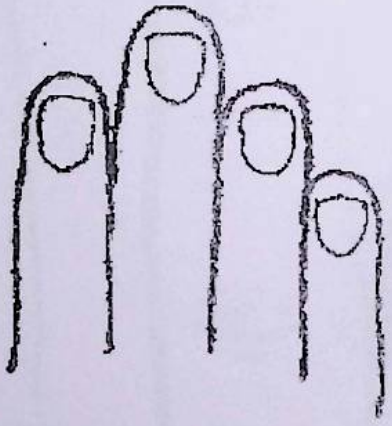

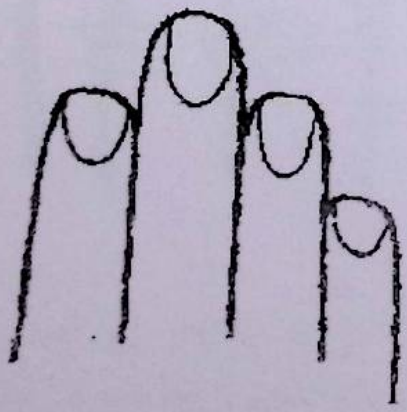

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaiapole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh